रागविनोद ॥

जिसमें

श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द व जगज्जननी वृषभान नन्दिनी का गुणानुवाद ठुमरी, होली, गजल, ख्याल, रेखतादि रागोंमें वर्णित है ॥

जिसको

कानपुर प्रदेशान्तर्गत भगवन्तपुर ग्रामनिवासी श्री पण्डित महादेवशुक्लने कृष्णरस रसिक पुरुषों के अवलोकनार्थ अतीव भक्त्यनुराग से निर्मित किया

प्रथमबार

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखानेमें छपी
दिसम्बरसन १८८९ ई० ॥

विज्ञापन ॥

प्रकटहो कि यह पुस्तक रागविनोद नामक जिसको कि श्री कानपूर प्रदेशान्तर्गत भगवन्तपुर ग्राम निवासी शुक्लवंशावतंस श्रीमहादेव शुक्लने केवल अपनी भक्त्युद्गारतासे निर्मितकिया है इसमें श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्दके बाललीलासे लेकर मधुपुर गमनपर्यंत चरित्र और उद्धव व गोपियोंके परस्पर वार्त्तालाप समयके स्फुटिक २ पद अनेक प्रकारके रागोंमें कहेगये हैं इनके सिवाय द्रौपदी चीरहरण व कौरव पाण्डवोंके युद्ध समय केभी कुछपदहैं इसके अवलोकन करनेसे यह नहीं विदितहोता कि यहपुस्तक किसीप्राचीन कविकी बनाईहुई नहीं है—इसलिये इसको मुद्रित करने के योग्य समझकर श्रीमान् मुन्शीनवलकिशोर यन्त्रालयाधीशने स्वयन्त्रालयमें मुद्रितकराई आशाहै कि कृष्णरस रसिकपुरुष इसको अवलोकनकर आनन्दसे इसके ग्राहकहोंगे और यन्त्रालयाधीश व ग्रन्थकर्त्ताको धन्यवाददेंगे—

मैनेजर मतबा मुंशी नवलकिशोर
अवधसमाचार संपादक
लखनऊ

रागविनोद ॥

भजन ॥

हे गणेशलम्बोदर सकलबिघ्नहारी । सुमुखएक
दन्तकपिलबिकटगज करणनाथहेकरीन्द्रवदन उमात
नयअनंदकारी ॥ धूम्रकेतुगणाध्यक्षभालचन्द्रसर्वदक्ष
बिघ्नराजहरौबिघ्न देवनहितकारी । ठाढ़ोहौं दीनवन्धु
सुनिये कछुदयासिन्धु शङ्करकीबिपतिबिनातुम्हें कोनि
वारी १ करुमनसियरघुवीरचरणरति ॥ इन्द्रीसकलमि
लायलाय्यउर मेटिसकलभ्रमकरुनिरमलमति । रघु
नन्दनरघुबीररामहरि दशरथसुतभजु श्वासश्वासप्रति॥
वनइससैञ्जत्तिसकुआँरवदिदुइज भूमिसुत दिवसकरी
नति । शङ्कररागविनोदलिख्योशुभ पढ़तसुनत राखत
रघुवरपति २ जोकहुँकर्महुँकोफलहोतो । तौनपरति
म्वहिंबिपतिकृपानिधि सोसमानफिरिकोतो ॥ रामकह
तनरहतदुखदायक कर्म्मप्रतीतिरहोतो । काकीकरिबि
श्वासरहौंप्रभुधीरनजातधरोतो ॥ जोपूरुबकोकहौधर्म्म
सुत कर्म्मसोकाहकरोतो । शङ्करदुखकोऊनापातो जो

श्रुतिहोतकहोतो ३ मूरतिदरददहनरघुराई ॥ कपिसुग्रीवविभीषणजनको भेटेउहृदयलगाई। निजकृतकर्म्मबधूगौतमकी शिलातारिपहुंचाई ॥ सुनतपुकारदीनद्रुपदीकी देहखुलननहिंपाई। राखिलियेखगअण्डघण्टतर पाण्डुसुतनअपनाई ॥ यद्यपिद्रोहकियोसुरपतिसुत कहिनजायकुटिलाई। जानिशरणदइ अभयकृपानिधि कीर्त्तिरहीनभञ्छाई ॥ गुरुद्विजमातुविप्रसुतलायो श्रुतिनपुराणनगाई। शङ्करहीकी बेरकृपानिधि साधिलईनिठुराई ४ देखतभूपकुवँरफुलवाई ॥ ताहीसमयसियासुन्दरितहँ गौरीपूजनजननिपठाई। फूलेफरेद्रुमनकुञ्जनमें टोरतसुमनमुदितदोउभाई ॥ अवचकभेटभईविलोकिदोउ नयनसोंनयनरहेउरझाई। भयेअनङ्गरङ्गदूनौंवश सखीविलोकिरहींमुसक्याई ॥ देखिसुमित्रानन्दमगनमन गुरुआयसुकीसुरतिकराई। शङ्करहियासियधरिमूरतिवह मृदुमुसक्यायफिरीहरषाई ५ भूपकुवँरकश्चनअँगना खेलतपदनूपुरबाजतरी। गभुआरेकारेशिरऊपर घुंघुआरेकचभ्राजतरी ॥ कठुलाशुभकण्ठहियेभँगियाकाजरअनखनमुखराजतरी। शंकरशंकरनयनबयनतन द्युतिअनङ्गकीलाजतरी ६ प्रभुचूकपरीसोपरीहमसों शिशुजानिमुनीशदयाकरिये ॥ नाहकशरचापकुठारगह्यो क्षत्रीहमद्विजदेखतडरिये। तुमज्ञानवानबलवानगुणीशिशु अज्ञवचननहृदयधरिये ॥ हमराजकुवँरतुममुनिकुमारकुलपूज्य जानिचरणनपरिये। द्विजमूरतिशंकरशान्तसदा श्रुतिगावतक्रोधसमुझिहरिये ७

अबमेरेबैरपरोबनमाली॥ लैलैनामसखिनमेंटेरत ऐसो अजबकुचाली। करिमालिनिकोभेषसखिनमें जायल गावतडाली॥ कबहुंकनाइनिबनिउपटततन ऐसोनँद कोख्याली। शङ्करचहतकरतसोइसजनी अतिलवार नटजाली ८ ईनरनारायणहैंदोऊ॥ इनसनकरहुनबैर सुयोधन मानिवचनईलेऊ। इनकोजीतनहारमनुजसुर नहिंत्रिभुवनमाकोऊ॥ तुमधृतराष्ट्रतनयईपांडुके शत्रु मित्रएकहोऊ। शंकरनृपपरिहरहुबैर सबकियाअबतक जोजोऊ ९ सुधिलेतचराचरकीसबकी प्रभुकाहेसुरति हमरीबिसराई। श्रुतिशास्त्रपुराणअरूपकहैं करुणानि धिढूंढ़िकवनविधिपाई॥ बिनरूपअगोचरकोकहिकैकव नीविधिअपर्नीब्यथासुनाई। तनरूपधरेवहुबिधिकृपाल बामननरहरिभृगुपतिरघुराई॥ करिकाजछिपेसगरेकरु णानिधिआशलगायकहोकहँजाई। शंकरविश्वंभरनाम वेदमुनिशेशमहेशसबनकहिगाई १० ब्यापकचितब्रह्म चराचरमें श्रुतिनाथअहर्निशगावतहैं। करचरणसहस लोचनहजार मुखसहसश्रवणअसध्यावतहैं॥ कहि गायगायनरसुरमुनीश जाकोनशेशकहिपावतहैं। सुधि लेतचराचरकीसबकी शंकरहिकोकसबिसरावतहैं ११ आरतकोइशरणगहैहरिकीपावतसुखयहगावतपुरान। हमरीप्रभुबारनिठुरबनिकैकवनीदिशिह्वैगयोअँतर्द्धान॥ कहुँकह्योभविष्यकहुँभूतआन ध्यावतदुखमनकाहूरहा न। शंकरकीबेरतजीकरुणा कछुदेखिपरतनहिं वर्त्तमा न १२ हमनीचगरीबिनिभीलिनि हैं बनवासिनिनाथक

जायजायजन्मिदुःख पायेबहुतेरी। कामीलंपटविंचारि दीन्होप्रभुजोबिसारि देखौंश्रुतिचारिबुद्धि केहिनाइनफेरी॥ देवदनुजमुनिमहीप वासीजेद्वीपद्वीप॰ तिनकोप्रभु दियोतारि लायोनहिंदेरी। शंकरतुमहूंबिसारि देहौजो हेमुरारि लेहैसुधिकोहमारि कृपादृष्टिहेरी २१ कबहूंरघुबरकृपालकरिकृपाचितैहौ॥ मेरेदुखदुरितजाल काटौ अवधेशलाल मेरोप्रभुजानिहाल सर्वदाहितैहौ। काम क्रोधलोभंमोह मोहींसोंकरतद्रोह अहंकारइन्द्रिनके विषयक्कबरितैहौ॥ करिहौमनकबहमार भजिहौंप्रभुपद तुम्हार शामसुबूसकलकाल सुखहिसोंबितैहौ। शंकर अकुलातनाथ जातेनहिंदामहाथ जानिकैअनाथदुःख सिंधुतेबचैहौ २२ कवनेमुखकहौंहालहैंकृपालअपनो॥ असनवसनदेहगेह नातजगतहितुसनेह भूमिरूपरतन यतन झूठोज्योंसपनो। तदपिनाथतजतनाहि दीजैप्रभु दोषकाहि तापैप्रभुसोंपुकार करतयहीअदनो॥ यामें यकहेतुनाथ कहतहौंनवाइमाथ अगुनीसुतकोददाति मातुपिताअसनो। शंकरगुणऐसनाहि ढूंढौंकहिंभूपजा हियाहीतेनाथचरण भवनचहतबसनो २३ लागतजेहि कांटकांटव्यथातेहीजानी॥ भूखेकीदेखिपीर क्षुधितनयन बहतनीरअगुनीधनवानहृदयहोतज्योंपषानी।कामक्रोध मोहलोभजानतनकरतक्षोभ ताहूपैनिरखुकहूं कियोनहीं ज्ञानी॥ लीन्हेजबजबवतार हरिबेकोभूमिभार इनको बललीननाथ होइहौपाहिंचानी। शंकरपैकाकसूर रास्यो दस्तूरशूर जातेकरुणानिधान सुरतिहूभुलानी २४ अब

तौंकरुणानिधाननेकनजरिहेरो ॥ धरिहौंऔगुनहमार होइहौंनहिंनाथपार देखतभवभारनाथ शरणगह्योंतेरो। भटकिभटकिय्योनियोनि कीन्हीअनहोनिहोनि बसनअस नकाजभयोंआनहीकोचेरो॥कीन्होंअनुमानज्ञान होतना दयानिधानतुमतेकबतेहमारछूटिगोबसेरो। शंकरतुम्हरो कहाय काकेढिगनाथजाय यातेचितलायलाय रामहीको टेरो २५ रतनंतनऐसेबीतोजात ॥ करियेकहाउपायनहीं कछु निशिदिनमनपछितात। पदबेरीव्यवहारजगतकी भजननभक्तिसुहात॥ जीवशरणकेहियतनहोयप्रभु बिष यकरतमनघात। शङ्करयहजियआशकृपानिधि जीवब्र ह्मकोनात २६ रूपगन्धरसमेंज्योंरांचा॥ गन्धपरशवशभ योअहर्निश यदपिविषयदुखदयोतमाचा। रहतमगनम नबिनकारणक्षण पलअसहोतिब्रह्ममेंसांचा ॥ तौनग हतयमदूतस्वर्गपथ यहप्रणवेदपुराणनबांचा । शंकर भवभयदेखिलेखिहिय सुखअनुरागरामपदयांचा २७ शीशघुंघुआरकारसोहैं छलीदारबार कानमेंजड़ाऊरत नारीलसैंबालरी। नयनखञ्जरीटकीट नासिकाविशाल चाल कण्ठकठुलानगूधी राजैंबीचलालरी ॥ भालमेंसिं दूरबीच बिन्दुकारकाजरकी मनहुंसरोजबीच राजैबसि भावरी । शंकरविलोकिरूप छाक्योकोशलेशभूप विहँ सिलगायोउर कहिधनिभागरी २८ रह्योनाकर्म्मधर्म्म व्यवहार । व्रततपजपसंयमहरिपूजन नासतअसत विचार ॥ लोककुटुमताजिलाजनारिनर करतसदाव्यभि चार। यशाहितदानमानआभूषण नास्मृतिवेदप्रचार॥

परगुणसुनतदाहबाढ़तउर सुखसुनितापअपार। शंकरकलिबलदेखिकृपानिधि लीन्हीशरणतुम्हार २९ क्षमैप्रभुतुमबिनअवगुणकौन। कायरकुटिलकृपणकामीअति कहँतककहौंकियेजौन॥ क्षमिआयेप्रभुक्षमतुक्षमौगे होजातेगमभौन। शवरीगीधअजामिलगणिका इनसमीपकियोगौन॥ दानविदितनृगनृपतिक्षमाविनियमबलिबलकियोलौन। शंकरजानिप्रभावकृपानिधि करतशीशपदनौन३०परोअसकवनकठिनदिनलाल॥ अतिसुकुमारबारतनसुन्दर निकसिपरयोलयवाल। मातुपिताजीवतकीनाहीं मिटतालिखीनाहिंभाल॥ हमजड़जीवभीलवनबासिनि निरखतिहोतबिहाल। शंकरदेखिप्रीतिप्रभुअटके कह्योभवनसबहाल ३१ कलिमलहरणशरणरघुवरकी। त्रिविधतापतमरविविवेकशशि करमकीचहारिलेतनरनकी॥ निजकृतकर्म्मशिलामुनिपतनी परीतरीरजपरतचरनकी। भववारिधिअगाधशंकरकी अजबबनीदृढ़नावतरनकी ३२ हमारोशाहगोविन्दमुरारि। कोठीहृदयबिदितत्रिभुवनमें हैं मुनीमनिलभारि॥खाताधर्म्मशुभारबहीरवि दीपचन्द्रउजियारि। शंकरलाखहजारअर्बतक हुण्डीदेतसकारि ३३ रमापतिअबहोइयेअनुकूल। हरिपदकमलबसैंनिशिवासर मिटाहिंसकलभवशूल॥ परमानन्दवृन्दसागरमें खेंचतरतनअमूल। करहुकृपादयालशंकरपर मेटिकरमकीभूल ३४ मेरेयाअँदेशाउरछायो॥ अकथ अनीहअरूपब्रह्ममें कैसेजगउठिआयो। कबते

आयरहैकबतकयह काहूँभ्रमनमिटायो ॥ केहिविधि शान्तहोयकरुणानिधि जोप्रपञ्चउपजायो । शंकरजग तकहोंकाक्येयह समुभ्कतयासुखपायो ३५ कबहुँक मनहरिकी ओर लागिहौं ॥ काम क्रोधअभिमानबड़ाई परनिंदाममताहठ त्यागिहौं । आशा सेजअज्ञान निशाते द्वैतनींदपरिहरिउठिजागिहौं ॥ देहगेहसुतवित कलत्रमाहावंभावकरिपैनठागिहौं। शंकरतपजपव्रतसंयमकरि नेहरामचरणनदृढ़मांगिहौं ३६ मनकीसबजानत हौमेरी ॥ कोअपनीकहिकहिप्रभुगावैदुःखकथाबहुतेरी। बारिधिलहरिभेदनहिंजानत लोहधाररचिखेरी॥घटघट केवासीअविनासीतासोंकाहदुपेरी । लईबचायलाजद्रुपदीकी दुःशासनजबघेरी ॥ महभारतभरुहीकेअंडा सुमिरततुमहिंबचेरी । रावरंकतेकरयोसुदामे पटरानी करीचेरी ॥ कपिसुग्रीवविभीषणसुमिरत राज्यदईबहुतेरी। शंकरहीकीवेरकृपानिधि काहेनजरिप्रभुफेरी ३७ सुनीद्रुपदीकीकौनेकान ॥ भरुहीअंडगयंदघण्टतरराखे कृपानिधान। सुनतसकलव्यापकघटघटमेंगायोश्रुतिनपुरान ॥ होहिप्रतीतिनाथकहुकैसे बिनअपनीपहिंचान। शंकरहीकीवेरकृपानिधि ह्वैरह्योअंतर्द्धान ३८ तिहारो विश्वंभरप्रभुनाम ॥ कहुंकहुंपोषणभरणकरतहौ देखौ आठौयाम। कहुंकहुंकीसुधिक्षणनकरतहो यांनतिहारो काम ॥ वेदपुराणउपनिषदगावत प्रभुव्यापकसबठाम। शंकरवेरकहारघुनंदन सोयरह्योकेहिठाम ३९ हमारेप्रभुकरमनकीगणना ॥ विश्वंभरप्रभुनामतिहारोसोविज्ञा

रिभरना । तुमप्रेरकबुधिसकलजीवकेसोलखिकरुशरना ॥ कुटिलाईतनमानमदनकी दुरिताईनधरना । शंकरतुमबिननाथहरतकोयाजीवनमरना ४०. सुखसागर आगरनटनागर ॥ दरदहरणभवशरणनंदसुतबिनकारणउपकारिउजागर । शंकरकीमनतापहरणको सदाउदयजिमिनभसिसुधाकर ४१ बाजतिचलतपदनपैजनियां ॥ खेलतमहिमन्दिर अँगनामेंदियेताजचवतनियां । चहुंभैयामैयाढिगखेलत कहततोतलीबनियां॥गभुवारे घुंघुवारेशीशपरबारभालअनखनियां । देखतहँसतविंवगहिशंकरहोतिसुखीनृपरनियां ४२ अणीकपिरैहौंतेरोबीर ॥ एककाजकोदेवकहौकपि प्राणनसहितशरीर । औरकाजकोमोलपवनसुतहैनहमारेतीर ॥ कोसागरधँसिदेखिप्रियाको हरतहमारीपीर । शंकरसुनतवचनसुखपायोभरिआयोदृगनीर ४३ रामचन्द्रजागियेभयोभोर ॥ अरुणाईपूरुबमेंछाई खगनसदनकियोशोर । मागधसूतपढ़त विरदावलि ठाढ़ेढिगचहुंओर ॥ जागे श्रीमहराजकृपानिधि खोलिनयनकीकोर । शंकरसुखउपज्योसबकेहियजिमिलखिचन्द्रचकोर ४४ तजन चहततनप्राणपियारे ॥ आवहुनिकटप्रिये कौशल्ये अपनोकरशिरराखोहमारे । नहिंसूझतनयननयहिऔसर घूमतविकलनयनकेतारे ॥ हारघुवीरप्राणप्रियसुंदर मोहिंछोंड़िकसबनाहिंसिधारे । शंकरशापकथाअपनी कहिरामरामसियभूपपुकारे४५ अरेमनअबहरिपदअनुरागु॥कामक्रोधमदलोभद्रोहते समुझिदुसहतेभागु । या

मानुषतनरतनजातशठ अबनविषयसँगठागु ॥ अवि
नाशीचेतनतेरेतन लग्योबासनादागु । शंकरअबचेतौ
मनबावरमोहनिशातेजागु ४६ जगतकीऐसीदेखौभूल॥
सोवतपरोअचेतमूढ़अति आयुनदीकेकूल । भूलोफिर
तदेहलखिसुंदर कबहुंदूबरीथूल ॥ सुतवनितनकेसुनत
वचनप्रिय उपजतमनमेंफूल । शंकरपत्रडारसुखटूटत
ब्रह्मानँदतजिमूल४७पतितप्रभुहोइहैंऔरनआन॥अं
डकटाहभुवनअंदरमें मोसमकृपानिधान । क्षणभंगुरी
अशुचियहतनमें गुणकुलकोअभिमान ॥ श्रीरघुवीर
चरणचिंतनतज़ि रहतविषयमनध्यान । निजगुणसुन
तबढ़तआनँदहिय परगुणसुनिजिमिबान ॥ उपलकठो
रहृदयपंकजमेंबसतनपुरुषपुरान । व्रतजपतपसंयमती
रथ नहिंदेतनदीननदान ॥ मनसमेतसगरीइन्द्रीतनक
रतिननिजथलथान । शंकरकोजानतकबबिछुरयों भट
कतफिरयोंजहान४८ कवनउपायकरीरघुराई ॥ देहशत्रु
षटईनकियेबश बाँधीगांठिबड़ाई । नहिंसतसंगनेमब्रत
साधन कैसेध्यानलगाई॥ सुतवनिताग्रहकाजनातधन
याउपाधिआतिछाई । शंकरजगव्यवहारजारते शरणक
वनविधिआई ४९ भजुमनरामचरणसुखरासी॥ सुतव
निताकोइकामनऐहैं जबडरिहैंयमफासी । मिटतिनवि
पतिभजेबिनरघुपति बसेकल्पशतकासी ॥ श्रीरघुवीर
चरणचिंतनकरु भ्रमुनफेरिचौरासी । करुशंकरहरिच
रणप्रीतिअतितजिसंपतिचपलासी५० जन्मसबऐसेबी
तोजात॥सांझप्रातदुपहरबीतेसब सोवतखेलतखात ।

परगुणसुनतदाहबाढ़तउर निजगुणसुनिहरषात ॥ चौरासीभ्रमिभटकिकिकहूंबसि नेकनलागीलात । बीतिगई सबबेसवृथातहँ कियोनहरिसोंनात ॥ असनबसनधन धामवाममें मगनचितैमुसक्यात । कोइनहोतसहायअंतशठ करतकालजबघात ॥ अबहूंचेतुमूढ़खलबावर शिथिलभयेसबगात। शंकरजानुसकलस्वारथरतबंधुसुतासुततात ५१ नरतनुपायअमरतांठानी॥धनदारापरिवारबड़ाई नित्यआपनीजानी । गजरथतुरगदेखिनिशिवासर रहतिविषयबुधिसानी ॥ गयेपिताकहँमातुपितामह यानव्यथाउरआनी । परदुखहेतुफिरतनिशिवासरे कहिबानीअभिमानी ॥ देखुविचारिइहांनरतनुधरि रहे नराजारानी । शंकरअजहुंचेतुनरबावर भजिलेशारँगपानी५२ भटकतकहुंविश्रामनपायों । मनुजदनुजसुरनरजलथलमेंबहुतवारभ्रमिआयों॥ सुखदायकलायकसीतापतिताहिनहृदयबसायों।रघुनन्दनहरिकृष्णरमापति कहिमुखनामनगायों॥गुरुतीरथद्विजहरिहरजनकोदेखतमाथननायों॥ शंकरअधमकिहोयकवनगतिनिशिसोयोंदिनखायों५३ अरेमनऐसीगहनिगहौ ॥ लाभालाभ अमानमानदुख सुखसमजानिसहौ। स्तुतिनिन्दासुनिहर्षखेदतजितुमऔरेनकहौ॥ हरिपदप्रीतिकरौनिशिवासरहरिसोंकछुनचहौ। शंकरसुतवितगृहकलत्रतजिहरिपदशरणरहौ ५४ आजतककबहुंनआईलाज ॥ सुखहितकोटिउपायनिरन्तरकरतफिरयोधनकाज । छलबल करिजाग्योनिशिवासरपाल्योकुटुमसमाज॥कबहुंनभयो

हृदयनिरमलखलभज्योनरघुकुलराज।शंकरअबभजुज नकसुतापतिभजिसुरलोकचलाज ५५ कबहुंकऐसीलग नलगैहौ ॥ निशिवासररघुवीरचरणतेअन्तकहूंनाजैहौं। हैसबमेंव्यापकसीतापति जानिकटुकनाकैहौ ॥औरनकी सुनिबानिहृदयधरि तापअधिकनापैहौ । शंकरमित्रशत्रु दूनौंसमभेदखेदनालैहौ ५६ कबहुंकमनक्षनशरमनला यो ॥ मानुषजन्मपायनिजकरते कारणबिनहिबहायो । श्रीरघुवीरचरणचिंतनमेंइइन्द्रीनलगायो ॥ निशिवासर धायोविषयनमें लखियुवतिनमुखबायो । सुखहितकोटि उपायनिरन्तर करतनसोतुमपायो ॥कबहुंनतनक्षनबैठि बावरे हरिपदउरनबसायो ।शंकरथिरनभयोक्षणपलकहुँ मोहिंयहीपछितायो ५७मेरीऐसीनाथढिठाई॥ निशिदिन फिरतविषयसंगतिमें चाहतराममिताई । सेइबबूरकल्प तरु चाहत यहीअधिककुटिलाई ॥ कटुकनिबौरीबवतकृ पानिधिचाहतदाखमिठाई । शंकरसमुझिसमुझिरघुनंद न हृदयसदामुसक्याई ५८ नाकछुकहतबनतरघुराई ॥ चेतनरूपरहितश्रुतिगावत ब्रह्मअनादिकहाई । तहँकस प्रकटभयोभवसागर अचरजकहोनजाई ॥ बिनाभीति कसरचतचितेरो गजतुरंगआहिगाई।समुझतबनतकह तनहिंआवत धनिप्रभुकीप्रभुताई ॥ सुरमुनिनरकिन्नर पन्नगमिलिसबनसमाधिलगाई । तुवमायामहिमाअपार गतिकाहूढूंढ़िनपाई॥मैंबपुरोकहांरघुनन्दन केहिगनती महँआई । शंकरसमुझिसमुझिरघुनन्दन मायहिशीश नवाई ५९ बिनापरकेहिविधिअंडउड़ाऊं॥ महभारतद

लपरथ्योचहूंदिशि तासोंप्रभुअकुलाऊं। अबनधीररघुवी
रभीरलखि केहिविधिअण्डबचाऊं॥ रहतबनतनजात
करुणानिधि मोहपरीपछिताऊं। शंकरईप्रियप्राणअण्ड
प्रभुकासोंनाथछिपाऊँ ६० डगरजनिजैयौराजकुमार॥
डगरडगरप्रभुकोलभीलबनबिचरतलियेहथियार। नेक
नहोतदयाउनकेहियतुमअतितनुसुकुमार॥हमरेजियअ
तिहोतिदयाप्रभुतुम्हरेदेखिदिदार। उइहमरेपियचोरक
ठिनअतिपापीअधमलवार॥साधुअसाधुनारिनरसुंदरहैं
उनकेनविचार।शंकरदेखतहीभूषणपटलीहैंछोड़ितुम्हार
६१नाथकछुमायैदोषनहीं॥हैनजगततिहुंकालब्रह्ममें ल
खुउपनिषदसही।जिमिरज्जुबिचभ्रांतिसर्पकीताकोकाह
कही॥ मायाकछुनप्रपंचरच्योयह जिमिजलतरँगरही।
लखिउपजीव्यविरोधजगतकी कछुसाँचीनगही॥ चेत
नमहाअकाशब्रह्ममें कोटिनजगतलही। नैननहीकीभ्रां
तिशुक्तिमें देखीरजततही॥ हैनजगतजोकछुकलखतु
हे सोअनादिहरिही। शंकरजलनभतेजवायुमें व्यापक
हरिसबही ६२ तेजमेंतमकोक्याव्यवहार॥ सिंधुबीच
कहुंप्यासबसतुहै कहुँनभमेंतरुडार। मायाशब्दझूठ
कोकाहत ब्रह्मसत्यश्रुतिसार॥ कारणकीसमकार्य्यहोत
सब लखुघटपटनअपार। शंकरपरमानंदब्रह्ममें कसउ
पज्योसंसार ६३ जीवबासनाहिमेंटिकिरह्यो॥ जीवब्र
ह्मकोभेदयहीहै श्रुतिपुराणमुनिकह्यो। आपुशून्यचित
शून्यबासनामनसूनोजेहिगह्यो॥स्वप्नजालयहजगतझू
ठमेंपरिअपानतजिबह्यो। शंकरबिनसतसंगशास्त्रबिन

केहिसरूपनिजलह्योद६४मिरगजलतेकोलायोबारि॥च
र्ममृगेन्द्रकहांगजमार्‍योस्वप्ननगरबसिभारि। नभतरु
वरकेहिलह्योपुष्पफल कहँसुतबंध्यानारि॥ कहुँरज्जूके
सर्प्पडस्योहै देखौहृदयबिचारि। शंकरसमुझिप्रपंचझू
ठसब भयदीन्हीसबडारि६५ पूछतफिरतजनकफुलवा
ई॥ जोजहँमिलतनारिनरसुन्दर कवनदिशामिथिलेश
धराई। हंमुनीशपूजनकारणको लेनप्रसूनजातदोउ
भाई॥ मगमालीकरजोरिभयोसँग फलफूलीतहँजाय
देखाई। कदलीतालतमालशालजहँ-करणिकारखरजूर
सुहाई॥ कुटलप्रियालकेतकीराजति नीपतहांमुचुकुंद
लगाई। लगीप्रियंगुसप्तपर्णीजहँ असनविदारकोविदा
राई॥ चंपानागतगरउद्दालक मेवाबृक्षरहेझुकिआई।
जंभीरीअमरूदनारियर कोकपित्थकहिकोटिगनाई॥
लताअनेकभांतिभांतिनकी फूलीफरीरहीलपटाई। र
टतविहंगतरुनबापिनमें कोकिलहंसमधुरछबिछाई॥
देखिविशालबाटिकासुन्दर दशरथलालरहेहरषाई। शं
करलेनप्रसूनतेहीक्षण सियपूजनगिरिजाकोआई ६६
शरासनगहतचीन्हिहहरिलयो॥ बलभैयैदेसानदेखायो
चितैरामलखिगयो। दईठीकअरजुनकुंतीसुतहै अनन्द
अतिभयो॥बेधैगोयहयंत्रमीनकोगुरुविद्यायहदयो। हे
शंकरबलवानपांडुसुत यशात्रिभुवनयहिछयो ६७ सखी
चितदेखाअपनोरूप। धारिदरपनमनछनछनतनमें व्या
पकजगतअनूप॥ ज्योंपारखीरतनकोजानत नजरतखो
टाखूप। लखवावतनहिंबनतआनकोभारीयदपिअकू

प॥ संगतिकरिआपुइहगपरखत हरखतधरिधृतिजूप।
शंकरलखिप्रतिबिंबआपनो समुझिलईमुखचूप ६८
अबतौरामनामरटुरसना ॥ इन्द्रीसकलशिथिलकम्पि
ततन लाग्योबदनभयोबिनदसना । आदरतज्योनारि
बन्धुनसुत शोचतदेहरहीजबबसना॥ जसआदरपूरुब
सुतराखत देखिशिथिलअँगकरततितसना। शंकरसुख
सागरदशरथसुत रामनिगोड़िनिभजतितुकसना ६९
मनकोकाकोभावसुनैये॥ मनदौरायबहुतहमदेखो अ
धिकारीनहिंपैये । पायशरीरतीरधनबिसरो ताकोकस
समुझैये ॥ देखिप्रपञ्चसकलजीवनको मनहीमनमुस
क्यैये। ब्रह्मादिकजोहिपारनपावत औरेकहागनैये॥ च
कृतभईबुधिदेखिजगतभ्रम कासोंठीकलगैये। शंकरअ
सबिचारिकरुणानिधि शीशईशहीनैये ७० जीवकोजी
वतहीपुरुषार्थ । कृष्णबधूभीलनगहिलीन्ही यदपि
हतोसँगपार्थ॥ दुरयोधनपितुऔरेनपाल्यो जिनकीन्हो
रणभार्थ । शंकरब्रह्मरूपपुरुषारथ सुमिरतभयोंकृता
र्थ ७१ चहतमनसुयशबड़ाईमान॥ सेइबबूरचहतसुर
तरुफलऐसोनिपटअयान। चेरोभयोअनङ्गरावको ला
दिक्रोधअभिमान॥ परयशसुनतदाहउरबाढ़त अयश
सुनतशतकान । बिषयिनतानअमृतसमलागत राम
कथाजनुबान ॥ नहिंसतसङ्गतीर्थब्रतसंयम तपजपस
मतादान । शंकरकहतजीवपावरको होईकसकल्यान
७२ वेदकहिबावरकरतसबै॥ जासुरूपलखिआपुनपा
वतताहिसबनलखवै । जोनपढ़तश्रुतिशास्त्ररतनगुण

औरनकसपढ़वै ॥ हौअतिकठिनअवधपतिसुन्दर कहतनबुद्धिदवै। कैसेबहिरमुखिनइन्द्रिनको करिसनमुख सिखवै ॥ लखिऔंधियारकारघटभीतर कोमूरतिवसवै। शंकरसुनतअरूपकवनविधि कहिकासोंघटवै ७३ देखतजगततमासोखासो ॥ इन्द्रजालसमजगउपजायोपूरिपवनतनश्वासो। सुतबनितनधनअसनवसनमें दैदियोमायाभासो ॥ हैधौंकौनकहांतेआयोकौनदेहमें नासो। काहुनकीनविचारयारयह कहौंमरसयहकासो॥ यहगंधर्वनगरसमसुन्दरकोइस्वामीकोइदासो। निमिनभमेंघटवनतनशतसतचेतनहींमेंहरासो॥ हैअचरजकररूपजगतयहकाहुनसारगहासो। शंकरअजरअमरचेतनसबपूरणब्रह्मप्रकासो ७४ पापिनसदासुखपायो॥ धर्मवानतपवानदुखीअतिभयेपुराणनगायो। भक्तिज्ञानसोंवैररामसोंअधमनहृदयलगायो॥ हरिकेभजतहोतसुखसंपतिसुरपुरमरिसुखपायो। सबभूठीकोसुनैगुनैमनहमेंप्रतीतिनआयो॥ हिरण्याक्षरावणमधुकैटभकंसादिकबतलायो।गीधअजामिलगणिकातारीगीताकौनपढ़ायो॥ दुरयोधनसुखकियोउतैइत धर्मतनयदुखछायो। बचेनपाँचतनयद्रुपदीकेरोवतजन्मगवांयो॥ तरीकेकयीनृपदशरथनहिंकपिननाथअपनायो।बंदिपरेवसुदेवदेवकीकुबरीसुखदरशायो॥ ऋषिमुनितपकीन्हेदुखपावतनिश्चरसदासतायो। मोक्षकियोशिशुपालमूढ़कोनृगकृकलासबनायो॥ कहँलगकहौंजलंधरपतनीकोव्रतनाथछुटायो। व्यभिचारिणिगौतमपतनीकोपदरजरूपबनना

यो॥जिनगायोसुखहोतभजेतेवचननमोहिंसुहायो। कण
लैरतनसुदामैदीन्हेउ भूठहिकविनबनायो॥तबकाहेसुधि
लेतनंदसुतअवकाहेविसरायो। शंकरकीप्रभुलेतसुरति
नहिं यहैअधिकपछितायो ७५ धनिअवधेशधन्यमिथि
लापति। प्रकृतिपुरुषजेहिभयोसुतासुतशेशमहेशकरत
जाकीनाति॥ गावतवेदपुराणजासुयश पावतपारनकहि
जाकीगति। शंकरहर्षमर्षसुन्दरताजिसमसमधीदेखेसम
गतिमति ७६ ऐसेप्रीतिनिबाहनहारे॥ मीनहीनतनुधारि
धास्तितरणीधरिवैवश्वततारे। सागरक्षीरमथनकेकारण
कमठरूपधरिमंदरधारे॥ धरिबराहअवतारकृपानिधिपृ
थिवीजलतेनाथउबारे। भक्तअसुरप्रहलादकाजप्रभुनर
हरितनुधरिखंभविदारे॥सुरपतिहितवामनतनुधरिछलि
नापिलियेप्रभुत्रिभुवनसारे। गहिकरपरशुबिप्रकंटकन्
प नाशाकियेयशमहिविस्तारे॥ श्रीमहराजअवधपति
दशरथ तिनकेसुतभयेचारिउदारे। शवरीगीधनिषाद
विभीषण कपिकीरतिहितवनहिंसिधारे॥ श्रीबसुदेवदे
वकीसुतप्रभु कुंतीसुतनबचायनिहारे। बौधतथाकल
कीधरिधरितनु अतिशयप्रबलअसुरतनुफारे॥ कहँत
ककहौंकृपालुदयानिधि बिनप्रयासजिनजिनदुखतारे।
शंकरहीकीवेरकृपानिधिसुनतनटेरतनाथपुकारे ७७ यो
निनभटकतथिरनभयों। इकइकयोनिहजारवारभ्रमि ह
रिपदरतिनलयों॥ दुखमोचनसुखभवनकमलसम हरि
पदरतनभयों। कबहुंकसुरनरअसुरदनुजह्वै अहिपुर
जायठयों॥ सोनउपायकस्योंकरुणामय करमहिदोषद

यों। शंकरसुखसागरदशरथसुतपदरजशिरननयों ७८
नरतनरतनयतनबिनखोयो ॥ पायोपूर्वदानतपकोकरि
सोविसारिसुखसोयो। क्षणसुखलागिलह्योदारुणदुख
सुकृतसकलखलधोयो॥ पंचविषयमायाप्रपंचमेंबनिता
दिकमेंजोयो। शंकरजेनभज्योदशरथसुत अंतसमैसो
रोयो ७९ जन्मसबऐसेबीतिगये॥ श्रीरघुबीरचरणचि
न्तन तजिसुतवितमित्रभये। खेलतखातगयोबालाप
न रचिरचिखेलनये॥ तरुणभयेतरुणिनसँगसोयो व
दनकपोलदये। मातुपितागुरुसाधुदेवको शीशनभूलि
नये॥ रहतअहरनिशसँगविषयनके छलिपरवसनल
ये। शंकरबिनरघुबीरभजनतन तपपूरुबरितये ८०
मरकटकौनयतनसोंआये॥सागरअगमपारलंकापुरकौ
नेवीरपठाये। काकेतनयकहांकेवासी कौनसंदेशो ला
ये॥ जीवनप्राणकथारघुवरकी सुंदरश्रवणसुनाये। पुल
किततनभयोदेखिदशामम नयनदुहूंजलछाये॥ दारु
णकठिननिशाचरपुरमें कौनयतनचलिआये। सुनिशं
करकपिसकलकथाकहि जनकसुताहिसमुझाये ८१ द
यानिधिदोषनतोहिंअजौं॥ असनवसनसुंदरतनचाहत
इंद्रिनविषयसजौं। सुतबनिताधनसदनमदनमें जातन
मनबरजौं॥ हौंपावनसुंदरकुलभूषण कहतनआपुल
जौं। शंकरमोहलोभमदसंगति अजहुंननाथतजौं ८२
काहूविपतिसहायनकीन्हा॥हरिकोरमाकल्पतरुसुरपति
शिवशिरशशिलैलीन्हा। गिरिमैनादिवचायउदरधरि
ऋषिनधेनुदैदीन्हा॥ देवनकोदैदीनअमीरस कच्छोत्र

सुरसुरचीन्हा। कस्योनकहूँसहायसिंधुको जबशंकरमु
निपीन्हा ८३ जबअसखबरिधर्मसुतपाई। जीतिलिये
गंधर्वसर्वभट दुर्योधनकोलीनबधाई॥ बधुनसाहितलिये
जातभीमसुनि भुजठोंकतविहँसेहरषाई। कहतभरेतन
कोपकर्मयह मोरविचारिसुरनकियोआई॥ भनकपरीसु
निधर्मतनयमति बुद्धिशरीरविकलथहराई। सहिनस
केसुनिधर्मराजसुत दपटिकह्योनयननजलछाई॥ चुप
चुपभीमनकहवबचनअस बंधुविपतिकसतुम्हहिंसुहा
ई। विपतिबंधुकीसुनिहरषतजे तेअतिअधमअकीर
तिपाई॥ वैरहोतकुलधर्मसनातन देखहुवेदपुराणनगा
ई। निजकुलकोअपमानआनतेबीरवहीजोलेतबचाई॥
केहैकहाजगतमोकोसुनि बधूगयेसुरपुरनभलाई। फिरि
केहोहमवीरसभामें जबकहुंभूपजुरेंसमुदाई॥ केहैसब
धिकभीमगदाको धिकगांडीवपार्थप्रबलाई। शंकरवेगि
खेदिअलकातक बंधुसकलप्रियलेहुछुटाई ८४ ईदोउ
मेरुशिखरसमराजत॥ द्रुपदकुमारिउरोजसभामें केश
रिबारिदसाजत। केहरिहृदयकरीन्द्रशुण्डभुज क्रोधदवा
नलछाजत॥ पिकबयनीनयनीमृगसुंदर कीटनासिका
छाजत। केशमयूरशांतिऋषिमुनिसुर दुखनिश्चरस्तहँ
गाजत॥ रोमकूपतारागणशशिमुख तेजदिनेशप्रकाश
त। श्वासफणीन्द्ररोमतरुवरसमला जबयारिविराजत॥
धर्मतड़ागबारियदुनन्दनग्राहपाण्डुसुतभासत। लोभत्त
रंगकूलदेवव्रत बिदुरसाधुआराधत॥ बह्योप्रवाहबसन
नदसुन्दर सिंधुसभामिलिवासत। फोरिदुशासनभुजभू

धरजड़ शंकरयशध्वनिबाजत ८५ वावेरेआपानियतन सबझूठी। जोमनमूढ़बड़ाईचाहत सोनतिहारीमूठी॥ करेसेवानागिरिनिप्रियव्रत भोगीधराअनूठी। ताहूकीव हदेहनहींमहिकृष्णवधूगइंलूठी॥ गौतमसेमहिवलीम हामुनि भोगीइन्द्रवधूठी। रह्योननेमगाधिसुतकोजग याचतभोजनजूठी॥ असुरनचहीअमरतातिनकी होग इमृत्युअनूठी। शंकरकहतकृपारघुवरविन रहतिनभ वनअगूठी ८६ कैसोरँगभरिदीन्हातनतन॥नखशिखभ योप्रकाशसुखीसवसकलयोनिनिजचीन्हा। उड़िगोजब मुकतापानीसमराख्योभवनघरीना॥ याचेतनपवननन कीरंगति होतिजातिनितछीना। शंकरअसतनपायभज तहरि धनिउनहीकोजीना ८७ नींदभरीअंखियाँझुकि आई॥ तनकतनकसीबाँधिमुठीकर छोटेछोटेअँगनलईं ऐंड़ाई। करिकुंचितसबगातमूंदिदृग गोदपरेलीन्हीजमु हाई॥ पारिदियोपलनाकौशल्या रतनयतनतनबसन उढ़ाई। ठोंकतिगावतिस्वरनमाधुरे आनसानाशिशुदी नउठाई॥ सोयगयेकरुणागुणआगर मातुदियेकरशी शभुलाई। शंकरधनिदशरथकौशल्या बरणतसुरमुनि भाग्यबड़ाई ८८ कहांतकनिजकृतकर्मगनाउं॥करिआ योंअमियोनियोनिजे जानतप्रभुनानाउं। कहिगावोंसब नाथाकियेजे देहअमरतापाउं॥ तुमजानतव्यापकरघुनंद नतुमसोंकहाछपाउं। शंकरकीतुमहूंनक्षमोप्रभुतौकाकेढि गजाउं ८९ समुझुमनकोईनहींअपना॥सुतदारापरिवार सुहृदधन झूठयथासपना। भजुरघुवीरचरणपंकजशठ

जबतकगलकफना॥कफलागतबुधिसुधिनरहतकछु मि
टततऊतपना॥शंकरफिरिपछितातरामहरिहरशिवकियो
जपना ६०॥रागपीलू॥काहूसमुझतभेदनपायो॥याजगहै
कबतेकबतकयहकैंकैसेउपजायो। हैकाकोकसभेदभयोय
हसाँचनकाहुबतायो॥थावरजंगमजीवभेदलखिहौंमन
बुधिदवरायो। जीवनमरणमर्मसमुझतप्रभु लौटिअपुन
घटआयो॥पढ़िपढ़िशास्त्रपुराणवेदनर अपनीअपनी
गायो। शंकरसमुझिसमुझिअपनेमन ईशहिशीशनवा
यो ६१ तुमहींनाथकहौकाकरिये ॥ कामक्रोधमदलोभ
क्षुधारिपु घातकरतअतिडरिये। सुतदाराधनधामनिग
ड़पद कैसेहरिनिस्तरिये ॥ बिनारूपतनकोतुमकोश्रुति
कहतहृदयकसधरिये। शंकरसमुझिविनयकरुणानिधि
भवबारिधिदुखहरिये६२ काहेमोहिंदीनबन्धुबिसरायो॥
कामक्रोधमदलोभचातुरी क्षुधातृषातनआयो। निद्रामा
नमोहआलसगुण काहिननाथसतायो ॥ जबजबनाथ
धरेतनसुंदर तुमहुंकईबशलायो । तनधरिकस्योनकाक
रुणानिधि कहँसोयोनहिंखायो ॥ मारयोकंसपालिजन
नीपितु कुबिजाकंठलगायो । कवनसोपातकधरिजीवन
शिरयमकीपाशबँधायो॥ एकनारिकेकाजासिंधुधसिलंका
क्षारकरायो । असुरराजबलिजायछल्योप्रभु कुंतीसुतन
बचायो॥ करिकैहृदयबिचारिकृपानिधिअरजीमोरिबना
यो। शंकरहोयअभयकरुणानिधि एहीहुकुमचढ़ायो६३
सुखमेरेललनभवननहिंपायो ॥ परणतृणमंदिरबासि
मोहन बनबनगायचरायो । मैंकृपणीदधिकाजउलूखल

बाँध्योदण्डदेखायो ॥ कौनेमुखअबकहौंश्यामसों एकबा
रब्रजआयो। शंकरदेखिदशामेरीयह श्यामैंजायसुनायो
९४ करीतकसीरजीवनकौन ॥ सतचितब्रह्मपरमसुख
सागरछूटिगोप्रभुमौन। कर्मलादिबनायजीवनकरोकहो
प्रभुतौन ॥ बिनआधारअधेयरहतनहिं समुझिरहतम
नमौन। शंकरसमुझिजगतजीवनगति करतहरिपदनौ
न ९५ जगतयहऐसोब्रह्मअनादि ॥ नाकहिंबंधमोक्ष
सुखदुखनहिं नाकोईनरमादि। नाकोइजीवनजायआ
यकहुँ भयोभ्रमहिसोबादि ॥ जीवनमरणशरणकोइना
हीं नायमलोकफिसादि। शंकरकर्मजगतअजतनहरि
यहीरूपअणिमादि ९६ हेमनसमुझतयतननकोई ॥
भवनक्षुधाआलसतनबाधक करतभजनमहँगोई। सुत
दाराधनधामबामाहित जातबैससबखोई ॥ जोजैयेकहुं
भाजिग्रिपिनिमें तनगुणपहुँचतहोई। कामक्षुधाबाधत
निशिबासर सुतधनसुधिकरिरोई ॥ जबतकतनतबतक
दुखदायक जातनईगुणधोई। ब्रह्मादिकसनकादिआदि
प्रभु इनसोंकवनबचोई ॥ जबकफबाढ़िकंठअवरोधत
बिकलहोतजोइसोई। आदिअन्तसमगतिसबजनकी
पापपुण्यसँगदोई ॥ जबसेगयोफेरिनाहिंआयो ब्यंजन
यथारसोई। शंकरसमुझिसमुझिहरिपदभजि लखि
लखिजगतहँसोई ९७ हमैंसबझूठोलागतयार ॥ धर्म
अधर्मभेदकछुनाहीं ब्रह्मचर्य्यनरजार। समदाताकृपणी
देखेसब दासईशसुकुमार ॥ पण्डितमूढ़भेदकछुनाहीं झू
ठीकबिनपुकार। लौकिकतजिअनुभवनाहिंलकछु नास

तअसतउवार ॥ व्यभिचारिणीसतीसमसुंदर मिलतन ढूंढ़ेसार । झूठीकौनसाँचकौनीसुनि कबिअतिदीखल वार ॥ सांचोस्वर्गनरकझूठेसब समुझबकठिनअपार। तबशंकरयहमिटतसकलभ्रम द्रवहिंजोनंदकुमार ९८ करोअबहूंमनहरिसोंनेह ॥ बाढ्योतिमिरनयनाशिरभेसि त वारशिथिलभइदेह । शंकरअंतकामनाहिंआवत सु तवनिताधनगेह ९९ केहिविधिदोषदेहुँरघुराई ॥ पूज तआनमानंजियराखत चाहतआपुबड़ाई । यतनबिना सुतनारिप्रियाअलि मगनरहतमुखलाई ॥ हरषतगोद लगायसुतासुत धनधरिअतिकृपणाई । तजिहरिभक्ति रहतबिषयनसँग सोवतरैनिबिताई ॥ तपतीरथसंयम ब्रतसाधन दाननसाधुमिताई । शंकरसुखसागररघुवर पदभजिबिनकेहिगतिपाई १०० सबतजिभजहुनन्दाकि शोर ॥ कमलपदनूपुरकटक पटपीतलागीकोर । किंकि णीकटिललितराजति हुंकरतकरिजोर ॥ नाभिउदरगं भीरसुंदरछलाअँगुरिनपोर । कण्ठकठुलामालराजतभु जनअंगदछोर॥ कारशिरगभुवारराजतवारताखीओर। भालअनखनबिंदुनयनन किलकनयनमिरोर॥ जानुपा णिउमङ्गगहि महिचलतनँदघरभोर । छोड़िशंकरसक लभजुमन कृष्णसांखनचोर १ चरीसवमोहमिरगत नलता ॥ शास्त्रपुराणव्याधसमढूंढ़त पावतनाहींपता । कामक्रोधघनओटवसतुहै रहतअहर्निशदता ॥ फूल विरागजगननहिंपावत भूपमुनिननहिंहता । शंकरभ योनिराशयतननहिं ढूंढ़िफिरेउसवमता २ बलीहम

नहिंमाने । अतरफुलेललगायगलिनमेंनिकसतकारिक रिबाने॥बिनकारणगुरुद्विजसाधनसोंवैरवृथाकरिठाने। शंकरभजुरघुवीरचरणअब अँगवशभयेंविराने ६ भ जनबिनजीवनकोफलकौन॥ सुतबनितागृहअशनसक लसमपशुदेखेसबजौन। शंकरजेनभज्योरघुबरपदवृथा कियोतनुलोन ७ लाग्योवृद्धभयोतबशोचन॥ शिथिल भयेसवगातमनोहरवहतनीरदोउलोचन। शंकरतजितृ ष्णाअजहूंभजुश्रीहरिदुःखबिमोचन ८ अबमनछों डुकपटकुटिलाई । हरिपदकाहेनप्रीतिलगाई ॥ इकइ कयोनिहजारबारभ्रमिभोगतदुखनलईथिरताई। करिपू रबकलुसुकृतमहातपतेहिफलपायेदेहनरपाई ॥ खेलत खातगयोबालापनहिलिमिलिखेलतखेलबनाई। तरुण भयो तरुणिनसँगसोवत जातवैसशठजानिनपाई ॥ असनबसनसुतबन्धुसुहृद तनधनयुवतिनसुखशान्तिन पाई। सहिहिमघामअहरनिशधावतछलिधनधामकाम छविछाई ॥ रामनामचरचानिशिवासरकबहुंनहृदयस रोजसुहाई। परनिंदापरद्रोहमोहमेंपरनारिनछलिचलि अपनाई॥ शिथिलभयेसबगातसमुभुमनअबरघुवरप दकरहुमिताई । फिरिपीछेपछितावहावकरिजबकरगहि यमत्रासदेखाई ॥ सुतदाराकोइकामनआवतजिनछलि बलिसंपतिसबखाई। कोऊनहोतसहायजायमन जबय मपुरयमदेतबसाई॥ असविचारिरघुवीरचरणरतिकरु सबछोड़िशरमकदराई। शंकरश्रीरघुवीरचरणभजु भव सागरभ्रमबिननशिजाई ९ जातजबकाहुनपकरिल

यो ॥ आपअमलकरिलयोआनघर नहिंमासूलदयो। कालभूपदूंढ़तसेनासँग ताहूकोननयो ॥ अपनहुकुमफैलायचहूंदिशि नामनिशानठयो। परनारिनगहिभोगकियोहठितिनहूंकेत्रशनभयो ॥ मिलेवजीरजानिअपनेतन चितमनतबचितयो। घेरिकिलाजबकाललियोतबनिजधनसबरितयो ॥ बांधिलियोभरिमोटअन्नसब अपनो जौनबयो। शंकरकहूंदेखिनहिंपायो गरजतवीरगयो १०
मैंप्रभुकौनकुटिलताकीनी ॥ गावतबेदसकलघटव्यापकमोपैदृष्टिनदीनी। शरणपरयोंधरिखिलतिदयाकी सोऊनाथनचीनी ॥ शवरीगीधअजामिलगणिका अधम जातिमेंहीनी। वेदविदितपावनाकियेते सबकीरतिकरीनवीनी ॥ भरुहीअंडघंटतरराखे वाणीसुनतअधीनी। कातकसीरपरीशंकरपर नाथसुधिहुनालीनी ११ छूटिगयोकरिहुकुमअदूली। बसेआयसबजगतभूमिमें समुझिआपनीकठिनभकूली॥ रूठिगयोमालिकसिपाहपर देखिकठिनताहीसुधिभूली। शंकरसमुझिलौटिह्यांजिरतहैंसमुझिशाहकोहुकुमजलूली १२ हमरेकरैकोऐसिमजूरी। साहबबिनकाननयननको कोदेहैदस्तूरी ॥ साधनकोचूनीतृणनाहीं गणिकाखातीपूरी। देखनहारननिजनोकरको कोकामीकोकूरी ॥ ज्योंबनिताबेठीमन्दिरमें पतिसुनतीकहुंदूरी। कापरवैठिशिंगारकरैधर कापरपहिरैचूरी। नाहमकायरचोरचवाई नाहमजगतक्रूरी। नामालिकघरचाहहमारी नाहमकलुकजरूरी॥ कामबनेनहिंखुशीशाहके व्यगरतराखतसूरी। बसिनंगनदर

वाख्यगाथ्यो तातेबढ़ीगरूरी ॥ वेदथपेरदेखिमुखमारत उनकीदीखिसहूरी। शंकरदेइकहाअरजीयह मूंदीबातहजूरी १३ समदरशीसुनिहृदयडेरानो ॥ ज्योंबालककीनारिदेखिठग बलइतिवसनपहिरिनाहिंवानो। जोकोउहोयक्कीवसोकापर करधारेसजिलाखदहानो ॥ हैविश्वास नहृदययदपिडरसमदरशीकौनेमनमानो । असुरनवचतसुरनपालतहरि वेदपुराणनयहीबखानो॥ कपिसुग्रीवबचायसियाहितबालिहेतुकरशरसंधानो।पवनसुतहियशदीनभुवनतंबजबवारिधिधसिकीनपयानो॥ अपनेहीप्रभुकाजकपिनको लाग्यअवधकीन्होसनमानो । जहँदेखौतहँगीधअजामिल शबरीगणिकाकविननिदानो॥ तबसुधिलेतपशुनपक्षिनकी अबकाहेकहुंजायलुकानो। औरेनकीसुनिकहीसबनकविमनअपनेनकहूँअनुमानो॥ हमइककहतसुनोसांचीसबतदपिश्रुतिनकोएकबहानो। शंकरअबहुशियाररहबसबवेदकहतवहपुरुषपुरानो १४ हरिकीगाईकविनबसीठी॥ दीनिलुडायराज्यराजनकी कहिकहिबातेंमीठी।अपनेमुखश्रुतिसोंअपनीसबगाईकथाअनूठी ॥ विश्वंभरधरिनामधामघटदईजगतसोंपीठी । शंकरसुनिसुनिसकलकविनकी जगतीक्रोधअँगीठी१५ बरबटजातरतनतनकरते ॥ चौरासीभटकतनलह्योसुखअभयभयोनयमडरते । क्षीणहोतनितजातप्रातनिशि यथावारिकरतलते ॥ अबचेतौनाहिंजातफेरिखल चौरासीतननरते । छोड़िसुतासुततातसुहृदधन प्रीतिकरौरघुबरते ॥ तीनिउपनबीतेविषयनरत भयोविरागन

घरते। शंकरमिलेबिनाकैसेसुखनिकसैमोहकहरते १६
हमारेकुलकेरामकही॥ वहप्रहलादभयोकंटकद्रुम चंद
नदैत्यमही। जोमेरोकुलशत्रुकठिनखल ताकीभक्ति
गही॥ मोहिलजायफिरयोत्रिभुवनमें जहँजहँबरित
ही। याकुलकीकीरतिअतिपावन यहिसुतजन्मिवही॥
नामिनकेनहोतपितुसमसुत याजगबातसही। शंकरजो
ऐसेहोइहैंसब काहेककीर्त्तिरही १७ हमरेब्रततीरथको
नकरैहमकोहठिनरकबसावनेहै। कविगावतविश्वंभर
पदमें हमकोहरतारलगावनेहै॥ हमलेतखबरिअपने
जनकी हमकोपरअपनकहावनेहै। अबतकजोखबरिभ
ईनउहां चलिकैअबकाहलजावनेहै॥ जहँबूझगीधग
णिकाखलकीतहँ द्विजनकोकाहरहावनेहै। शंकरकीसुर
तिकहूंनकरी हरिकोहमैंसुरतिकरावनेहै १८ पाणिनिम
नहिंनपुंसककीन्हों॥ यहपरतीतिमानिमुनिवरकी सोंपि
नारितनदीन्हों। निमकहरामविमुखह्वैबैठोजबसुन्दरतन
चीन्हों॥ जाकोसुतप्रसिद्धत्रिभुवनमेंचीन्हमनोजनली
न्हों। शंकरभूलकहोंकाकीयह समुझिसमुझिभ्रमपी
न्हों १९ जसमोहनरसकोतसकोरी॥ रारिकरतसँकरी
कुंजनमें गहिकरभुजकोमलमसकोरी। नयनबयनभृकु
टीमुखलखिसखि सुनिबँसुरीहोयनबशकोरी॥ जबयशु
दासनजातिकहातिकछु कहतिनशिशुजनुदिनदशकोरी।
शंकरयहजानतसिगरोब्रजकहैबातब्रजरीअसकोरी २०
याब्रजलाज जातसबडरडर॥ नंदयशोमतिकाकरिहैं
फिरिजबसजनीकैहैंहमखरखर। संगसखनलीन्हेंविहरत

ब्रजखातफिरतगोरसनितघरघर ॥ पावतपारनबातकहृ
तनर चपललवारनंदसुतबरवर । शंकरआजुपकरुमो
हनकोकहँतकरीकँपियेतनथरथर २१ सानकरिगावतनी
कीतान ॥ सांझसकारबजायबांसुरी हरतसखिनकेप्रा
न । सुनिसुधिबुधिसजनीनरहीमुहिं लगीतानजिमिबा
न ॥ घरअँगनानसुहातसखीरी रह्योनमुहिंकछुभान ।
नाजानोंटोनासीकीन्हीं परतबांसुरीकान॥ कोइकोइजाय
मिलीमोहनको छोड़िसकलमनमान । हमनारिनकी
कौनचलावे हरतमुनिनकेज्ञान ॥ भृकुटीकुटिलभालअ
तिराजति नयनचलतजनुवान । शंकरधनिमुरलीकर
राजति करतअधररसपान २२ हमरेयारीकुबरीख
टको । जाकेअंगमेंटेढ़ोभटको ॥ कौनीबिधिसोवतिध
रिभूषण कैसेहरिपरसतउरघटको । टेढ़ीदासीदासीनृप
की मनलोभकहानागरनटको ॥ सुनिरूपगयोतजिकैब्र
जको बरजतनामानोरीहटको । शंकरबशकीन्होहमरो
गोपालकैसेधोंकीन्होंरीटटको २३ दशननरसनादाबिर
हीरी॥ करिनायनिकोवेषनंदसुत वेनीगूँधिमिलायलही
री॥ परसिकपोलखोलिकंचुकिकर कोमलकरभुजजोरग
हीरी ॥ नासामोरिनचायदुहूंहगअतिमुसक्यायभईरि
सहीरी। शंकरहायकियोहमसोंछल उचितनमोहनसकु
चिकहीरी २४ दरशतरशकंचुकिपटपरसत ॥ छलकिब
ढ्योश्रमविंदुरोमसब उठिथहरयोसिगरोअँगपरसत ।
उमँगिमनोजभरेनयननजल विहँसनिवाकीमनसुखवर
सत ॥ करिगइभावअनेकछुवतकर जाहिसदासुरनरमु

नितरसत। शंकरसोरसदेखिभयोबश नंदनन्दनकीन्हे रचिधरसत २५ ऊधवकेसेबसतुमथुरा॥ तुमअक्रूर समानजहांनर कहतनबालफुरा। करयोनाशवसिके सरजाको जोरणपरिनमुरा॥ दासीदेहकर्मदासीकोल खितनजालभुस। शंकरसुनिसांचीअपनीसों मनियो ननेकबुरा २६ ऊधवधनिमथुराकेलोग॥ उनकोबासउ न्हींकोछाजतआननयोग्यसँयोग। अपनीअपनीबुधि मारगसोंकरतभवनकेभोग॥ सहँयहगयोअहीरनन्दको ह्वैगईदासीरोग। वृश्चिकहूकोमंत्रनजानत अहिंगले बांधतधोग। तहांअपनगुणकौनचलैहैतुमसेनमोहन ढोंग। शंकरजायकहबमोहनसोंब्रजकोकाठिनबियोग २७ ऊधवकोजानतुपरपीर॥ हरीआयदशशीशजानकीपं चवटीकेतीर। हरषेसुरकिन्नरमुनिसुनिऋषि हर्षितपुल किशरीर॥ ग्रीषमसरसूखतमीननको देखिसुखीआभी र। शंकरसुखीश्यामहमरोदुखजानतुनाहिंअहीर २८ ऊधवईनासोहतढंग॥ पावनगोपवंशनँदनंदनकीन्होंदा सीसंग। ब्रह्मादिकजेहिपारनपावतबशकियोताहिअनं ग॥ बसीश्याममूरतिऊधवमन लागतयोगनरंग। मनसँगगयोश्यामसुंदरके हमपरबिनाबिहंग॥ हरि नयननमनअटकिरह्योहै जिमिशिशुचंगनचंग। खैंच तडरतिसुसतिगुणनिशिदिन खैंचतहोयनभंग॥ ऊधव हरिकोदोषनहींहै हैनिरमलजिमिगंग। शंकरईरसबैनह मारेनरनारिनकीजंग २९ मेरेसमुभतहीसबभूठो॥ जोगायोमिलिकबिनपुराणनतेरोसुयशअनूठो। कबगी

नागणिकाखगगायो फलशवरीदेजूठो॥ भरुहीअंडघंट तररारवेद्विजभरितण्डुलमठो।गावतरावसुदामेकीन्हों शंकरपैकसरूठो ३० ऊधवकौनकथाबिस्तारी ॥ माधव हालबालऊधवब्रज कामबिरहकीजारी । सुनियहयोग तुम्हारोऊधवहँसतसकलनरनारी ॥ याब्रजबसतअही रवीरअति हैंनयोगअधिकारी । योंकहिजायद्विजनउप देशोपठतजेहैंश्रुतिचारी ॥ याब्रजनँदनंदनकीमूरतिबि सरैनहींबिसारी । बाधिकमोरिमिरगतृष्णाते कोभरिला योबारी ॥ ऊधवनिरगुणयोगकठिनहै नाहकहोतदुखा री । शंकरनंदनँदनचरणनमें अटकीसुरतिहमारी ३१ याचतचातकसोदिनराती ॥ बारिदबारिभरेनभगरजत वाकीमांगतचुंचभुराती । वालेखेनदसूखसरोवरभावत नहिंमंडूकबराती ॥ सुखीमयूरगिरिनबनबिहरत जलबिनदुखितपपीहनजाती । शंकरतबपावतबारिदसु खजबमुखबरासिजुड़ावतस्वाती ३२ ऊधवधनिकुबरी केभाग॥ जाकोसुरमुनिध्याननपावतकरतयोगजपयाग। सोचेरीकेनयनबयनसोंरूपदेखिगयोठाग ॥ ब्रह्मादिक जेहिपारनपावत भयमायासोयाग । सोचेरीमायावेरी परि कियोनंदकुलदाग ॥ अबऊधवहरिकेसबगाहैंकदे खिपरतहितुसाग । तबनकहूँराख्योशिशुपनमें जबज ननीकियोत्याग ॥ सोनशोचसोनेकीसूजिनडारतसबज नताग॥पैऐसोनहिंउचितश्यामकोतज्योबिरजबिनिला ग ॥ अबजोड़ीभलबनीश्यामकीज्योंकोयलअरुकाग । शंकरप्रीतिनिरहति सत्यकहिहमकोलिखतबिराग ३३

तनकरुधिकऊधवजैबोलेत । देखोआयलोलमोहनकोये हैंमनुजसमेत ॥ करिहेंसुरतिसायगोवनकी कारीधूम रिसेत । भरिहेंजलनयनमारिशुनके कारकमोरिहूबिहंत ॥ एकबेरकहियोब्रजआवहु बसैनन्दनिकेत । तुम बिनाबिकलनन्दनैंदनन्दन पशुनचरततृणखेत॥ यदपि कहांमधुपुरीसकलसुख तजबनयाब्रजहेत । शंकरएक बारब्रजआवहु मिलहुहोयब्रजचेत ४५ सुनोहमाफिरि आयोअक्रूर ॥ लैगयोप्राणहमारप्यारसखि निठुरनिप टअतिक्रूर । विरहमृतकलैजायनारिपल पिण्डकंसके पूर ॥ कोजानैकेहिकाजसखीरी गवनकियोचलिदूर । शङ्करसमुभिनजातभटूरी मधुपुरलोगसहूर ४६ ऊध वसुनिमनधीरनआवै ॥ याकुबिजादासीदासीअब सुनि यतुरानिकहावै । कहँतककहोंसकलब्रजकोदुख आपुहि ब्रजदरशावै ॥ लैअक्रूरअनन्दगयोब्रज कोयहतोप बुझावै । अलकलटाकिमनउरझिगयोसँग कोशंकरसु रझावै ४७ ऊधवहमयोगिनिब्रजनारी ॥ श्यामबिरह नलतपतिरहातिसब ध्यानसमाधिहमारी । उरझिकेश शिरजटामनोहर भस्मधूलितनसारी ॥ याब्रजविपिन भयोमोहनबिन भिरनानयनपनारी । शंकरसगुणयोग हमजानति नहिंनिरगुणअधिकारी ४८ बिरजप्रभुऐहैं मोहनफेरि ॥ तजिमथुराफिरिआयनन्दसुत देहैंआनँद हेरि । जातबाटदधिकाजसखीरी लहैमारगघेरि ॥ ना जानोटोनाकछुकीन्हों कंसरजाकीचेरि । याहीतेशंकर नहिआवत करीसखीसोंसेरि ४९ कारोहमनोहकटैयाम

सनेह ॥ नहिंकीन्हींकुलकोकलाजसखि बसमेरेमनत जिगेह। शंकरमोरमुकुटछबिलखिसखि अरपणकीन्हीं देह ५० सखीरीदीजैकाकोदोस॥ सुखदुखदैननहारत्र्या नसखि करमहिंदुखसुखकोस। खोटोदाममगांठिकासिलज नी करैमाहककअफसोस॥ पैनहिंधीरधरतबावरमन कर तआनपररोस। शंकरजबतकमिलतनसतगुरु होतन तबतकहोस ५१ नआयेजानिगरीबिनिलाल॥ नाघर बसनरतनमेरेकछु तापैकियोगोपाल। जायवहांवासिस इलमहलमें भूलेरतनधरिमाल॥ कहूंसिखायलियोमो हनको मातुपितावनिहाल। शंकरकेहिसैंतौंमाखनदधि खेलैकोनयेनयेख्याल ५२ मेरेनिधर्नाकेधनश्याम। बन बिहरतघरनन्दनआवत मोहिंनभावतधाम॥ मेरीगरी बतिमेंबसिमोहन सह्योशीतअरुघाम। शंकरकरतिसुर तिमोहनकी मोहिंनभावतकाम ५३ ऊधवइतनीकहियो जाय। मातिआवैंनिधनीमोरेग्रह दुखलह्योगायचराय॥ ऐहौंदेखिवहींलालनको बारबारचलिधाय। जोवसुदेवक हतमेरोसुत कहतदेवकीमाय॥ याकोदुखहमरेनहियेकछु सुनिसुनिजियहरषाय। बसनअसनगजरथतुरङ्गादिहो इनलालपराय॥ रैहैंसुखीवहांनँदनन्दन राखतिमनसमु झाय। शंकरएकबेरतरिथमिसि लालदरशदेउआय ५४ धनिकुबरीधनिधनिवाकोतप॥ नहिंपायकतारकिककार मिकपावतनहिंपठतचटतकप। ताहिकियोकुबरीअपनेव शनाजानोंकीन्होकौनोजप॥ कीसेयोत्रिपुरारिगङ्गजलकी हिमऋतुसेयोशीतलअप। शंकरश्यामभयेयातेवश हो

हि लोककुलकानिलाजशाप ५५ सोवदरोऊधवनैनमेये। निशिदिनकरतउरोजगिरिनपे प्रातकविहूनये। सूख तनहींवसनंतनसुंदरखंजनाछयमेमये ॥ बिजुलीकुलह मनकिनिशिआसर महनकिसोनमये। शंकरयोमोहि कुबरीसखि बीजनसुखहिदये ५६ मोहनयोगकुगोरि कहँपाई ॥ बालपनऊधवहमरेब्रज वनवनगोपचराई। घरघरचोरिचोरिदधिमाखन गोपवधुनखीलाई ॥ ह्रौस ममेनिशिशरदचन्द्रके वंशीबिपिनबजाई। ब्रजवनित नवहँलायरहसकरि नाचतलाजनआई ॥ अबमधुपुरी जायमनमोहन ब्रजवनिताविसराई। कुबिजाकोलैमंत्र निठुरअब यहमायाफैलाई ॥ ऊधवबस्योनन्दनन्दनाउ र हमहिंनऔरसुहाई। शंकरतुमलैजावयोगकोहमरेब्रज नसमाई ५७मेराकरगह्योहाथसोंनंदकेदैया। ढीठनिपट मानीनतनकाउतआवतनँदलालग्वालहत जातिसखि नसँगमोहूंगोईया। मेंटभईसकरीकुंजममें मिजेदईफारि हारीपैया करलीन्होपिचकारीकनक ॥ निकसतरारिकरत वरजतनितसुनातिनकछुयशुदाजीमैया। शंकरगोपतिये विहरतबन चपलकहतिसोंअपनेसैंया मननहरतलुनि बँसुरीमनक ५८ सखीवहकूबरटोनायंत्र ॥ अतिटेढ़ो मेढ़ोतनराजत श्यामम्मिलनकोतंत्र। शंकरश्यामभयो दासीबशएकोकनचोमंत ५९ कुंजनह्वोउठोठकात्तव तियां ॥ कालोमनिसंगलियेललितछाहोउ कंधधरेभुज करैंमतियां। मदनभरेसुंदरकपोलपरजातिसुधरकेजम हँतियां ॥ चितैचपलनयनपंकजविशाल मुसक्यायाम

हतफिरिफिरिरतियां । शंकरकरकोमलसोमहँसिहँसि सी
हसूवतयुगुलयुगुलछतियां ६० मोहनछयलगयसनिनि
कसोरी ॥ करजिरहीयरजोनहिंमानत बैनचरतमननाहिं
रिसकोरी । मंयमनचायकियोभ्रमसेवश करमहँदेखिम
हमखिकसोरी ॥ कोअसवशनहोतिनागरिब्रज सुनेलव
चनब्राकोपिकसोरी । शंकरसांझसुबूनितआयत परो
काहिरसकोचिकसोरी ६१ घिनमोहनजियहियरीकस
के। कुबिजावशह्वैनतनकटसके ॥ सुनुरीसजनीऊधव
मुखसों कहिपठवावतिबानीवागसके। हमरोमोहनकुब
रीनशह्वैसमुझतनाहिंबातअरीजसके॥ अबतौपटरानी
भइसजनीमोहनअपनेकरिबसके । शंकरमँदनन्दनछ
यलभट् जानतसगरीबानीरसके ६२ ॥ ठुमरी भैरवी ॥
रोवतअतिसोवतनाहिंआज ॥ क्षणपलनाक्षणगोदल
गावति करननपावहुँकाज । शंकरजानिनजातभयोकह
पूछतिसखिनसमाज ६३ करिझकझोरिडारीमटुकिया
फोरि ॥ खायोदधिकछुसखनखवायो मानतनहिंबरजो
रि। शंकरकहँतककहिवाकेढँग भजोकंचुकिबँदटोरि६४
पालागौंकरजोरीपियामतिकरुबरजोरी ॥ यानाजुकसु
कुमारकमरखर खायगईबलमोरी।शंकरहौंचेरीतेरीपिय
अरजवयसकीथोरी ६५ मोकोनजगावसोवनदेजावजा
म ॥ सारीरयनमोकोजागतबीती ऐसोटसनवावधाव ।
शंकरपैयांपरोंकरजोरति मेरोबसनलावलाव६६फिरिर
थलखिबानितनदुखपायो । निपटश्यामब्रजअवधिसस
यो ॥ लैअक्रूरगयोमथुराको फेरिनिठुरनहिंताहिफेरायो॥

प्राणगयोलैसाथश्यामके अबकेहिकाजफेरिब्रजआयो॥
आन्योमारिकंसपिडनको मांससखिनहितरथलैआयो।
शंकरपैकुविजावशकेहरि नंदबबाकुलदागलआयो८७
लंपटउलटिपलटिकपिजारी॥ तजियकभवनाबिभांवर
जनको जगरिसकलकियोछारी। शंकरदेखिनारिनरनरि
इन्दर भेअतिनिपटदुखारी८८नाहकलीहमप्रीतिलगाई।
नंदनंदनसाधीनिठुराई॥ याब्रजराजकुवरीकेकाधनिपट
सकलब्रजसुधिबिसराई। शंकरबिननंदलालसखीरी र
हिरहिप्राणअधिकअकुलाई ७९लूटीनंतनकबाढ़ीसारी
रे॥ हेगोविन्दगोपालमधुसूदन हौं अवशरणतिहारीरे।
कुंतीसुतबोलतकछुनाहीं भीमगदाकरदियोडारि। ख
लअसुरदुशासनबसनकरनगहि लीनधर्मसुतहारीरे॥
तनधनवसनधर्मसुतहारे जातिलाजगिरधरहमारि म
ब्रजराजलाजगयेकोनकाज ऐहौफिरिकुंजनविहारीरे॥
वीरधीरसबबैठसभामें बचननकोईकहैविचारि। कौहि
जाउँशरणकरुणानिधान भयेमोनभीष्मव्रतधारीरे॥सं
करसुनिपुकारद्रुपदीकी बसनरूपप्रकट्योमुरारि। खैं
चतखैंचतगयोअसुरहारि कहिंनेकनभईहैउघारीरे७०लई
छीनिदधिमोरीभाजिहोबाचिगई ॥ लीहौंदधिकहिटेरि
लियोगृह धेसिगइपबैरिकई। सुनोदेखिमकनचककधक
जियव्हिलवतचकितभई॥ मायाटिकपाटद्रुपेमनमोहन
मैंचहुँदिशिचितई। शंकरभागिबचीखिरकीमग भयो
सहायदई ७१ कुंजनबिहारीबनवारीगिरधारीसारीलूट
लिहमारीमरहारीगाहिलीजिये॥ कुन्तीसुतबोलतकछुना

हीं नृपसुहिहारीजानी साधीचुपकारीअवशरणतिहारी
खगचारीयशकीजिये तुमताजिकाहिपुकारी। शंकरसुनि
पुकारद्रुपदीकी पटतनुधारीप्रकटारीअसुरारीभई नारीन
उघारीधनुधारीबलदीजिये अम्बरपरेहैंपहारी ७२ बची
हैलाजआजशिवभयोरीसहाय॥ चलीरीमगजातिमोको
लियोहैबुलाय।गयोरीलैकुञ्जनचितपटसमुझाय॥सघन
वनकुञ्जनमोकोगयोरीलेवाय। बिहँसिमोसोंहेरोहगअज
बनचाय॥अधकजियदेख्योंजलबिन्दुरहेछाय।कमलसम
मेरोमुखगयोकुम्हिलाय॥ कठिनजरबीलोतासोंकछुनबि
साय।कहतचेरीतेरीछुटिआईसौंहैंखाय।शंकरअतियाकी
कछुपरीहैअदायगलिनब्रजनारिनसोंहँसिअठिलाय ७३
मेरीपतरिकमरसुकुमारीरे। कैसेभरौंहारिभरिगगरी शिर
चलतलगतमगभारीरे। हाहाकरतिपियपैय्याँपरतिहौंना
थसदाचेरीतिहारिएकअरजबरजसुनियेहमरीजलजावँ
नराखौकहारीरे॥ यकदिनभरनगईयमुनाजल मिरुकि
कमरप्रभुगईहमारि । शंकरपियजियाप्रियहविचारि
कहियेनजावअबवारीरे ७४ थाकीकरतउपायमोसोंकै
सेरहोजाय ॥ मेरोपियाघरनाहींसखीरीरह्योंबसन्तनग
चाय मननाहिंधीरधरतमोहनबिन कोटिकहौंसमुझाय।
शंकरकवनमंत्रकुबिजापढ़ि रढ़िहरिलीन्होलुभाय ७५
तनकबिलमैहौकोइकरजोरि ॥ श्रीमहराजराजदशरथ
केआवतहैंमेरीखोरि । करियोठाढ़द्वारमंदिरके करिकरि
अरजनिहोरि ॥ सुनिकोइनारिखोलिमुखपंकज कढ़िठा
दीनिजपौरि। शंकरदेखिन्नकींनागरिसब कहिभनिजनक

किशोरि ७६ पथिकनेकठाढ़ेहोहुबटछाँह ॥ कवननग
रकेबासीबटोही जातधनुषगहेकाँह । मृगनयनीयहना
रिप्रियाके छौदोमेंकोनाह ॥ सांझभईबसिजावयहांप्रभु
आगेनहींइतराह । शंकरभीलनारिकहिपूछति गहिरघु
बरकीबांह ७७ नयनजलभरिभरिपूछतिनारि ॥ कारण
कवनाबिजनवनआये छोड़िपितामहतारि। कठिनबिजन
बनमेंविहरतुहौ नारिलियेसुकुमारि ॥ यहींबसौधनिभा
गहमारे परणमड़ैयाडारि । शंकरदेखिदशारघुबरकी
देतिबिधिहिसबगारि ७८ ॥ भैरवी ॥ रजतवदनझडूले
वार ॥ धूरिभरेखेलतअँगनामें वाकेनयनअपार । गां
गूंकहताकिलकिमुखसुंदर बारलसतघुंघुआर ॥ जाको
गावतपारनपावत श्रुतिपुराणबिस्तार । शंकरसोशिशु
नृपातिभवनमें खेलतकरतबिहार ७९ आलिरीबरात
जनकपुरआई। गजरथतुरंगसाजिसुन्दरदलबाजिरही
बीणासुरनाई ॥ सुनिलछिमनरघुबीरसखीरी चढ़िचढ़ि
गजनमिलेचलिजाई । घरघरगलिनगलिनबागनमेंको
लाहलआनँदनसमाई ॥ औरहिरूपधरयोरघुनन्दनशं
करसोउपमाकिमिगाई ८० मोसमपतितनहूसुधिलेत ॥
भक्तिप्रपंचदोऊडरनाहींताहूपैकुलुदेत । लेतसुरतिप्रभु
तुरतवहीक्षणजबदेखतसंकेत ॥ भईप्रतीतिमोहिंघट
घटमेंव्यापकयाहीहेत । शंकरकेअवधेशकुँवरप्रभु फर
तवयेविनखेत ८१ आवोआवोकहाँअटकेहरे श्रीगो
बिन्दब्रजराजआज ॥ न्यहखलवीचसभागहिलायो ली
नचहतप्रभुलाज । लाजगयेगोपालहमारे ऐहौकौने

काज ॥ कौरवकुलसागरअगाधमें डूबतलाजजहाज। शंकरसुनिपटरूपप्रकटभयो लोकनलोकअवाज ८२ बनरादशरथलालछबीलोआछोरे ॥ मोतीफूलोंकोग जराबनायो कछनीप्रीतिरुमाल। वारौंकोटिमदनसुं दरछबि चितवनिकरतनिहाल ॥ पीतभँगापटपीतप गाशिरपीतचँदनदियेभाल। शंकरमौरचवरशिरराजत जनुद्रुमउड़तमराल ८३ चक्रधरकितैगयेनँदलाल॥ हेकरुणासागरलक्ष्मीपति हेब्रजनाथगुपाल। कौरव सभाबीचमधुसूदन भयोनाथयहहाल ॥ यहधृतराष्ट्र तनयदुःशासन पटगहिकरतबिहाल। शंकरदेखिदुखी द्रुपदीको भयोबसनततकाल ८४ येढँगछोड़हुश्या म। तकतचलतपरबाम॥ जबदेखौतबमेरीगलीमें ठा ढ़ेआठौयाम। शंकरनिशिदिनयाही अँदेशोआननतु म्हरेकाम ८५ तज्योब्रजकरिकुबिजासोंनेह ॥ ब्रजव नितनकीकौनचलावत तजिदीन्हींपितुगेह। शंकरम नाहिंबहुतसमुझावति मोहनछोड़तिदेह ८६ म्वाहिं जानदेजानतजोडगरो। बिनकाजनकरुमोसों झग रो ॥ पहिंचानिविनामुसक्यातलला कोमलकरपर सतहौंहियरो। नाहिंकानिकरतमानतनवानि काहून डरतऐसोमगरो ॥ तरुनींबकीटप्रियनींबसदा सोइ जानिनतजतींयानगरो। शंकरछोटेनँदलालअबै अ बहींसोंमनऐसोबिगरो ८७ नईतेंआईदधिबेचनहारि। करतिचतुराईबिनकारणरारि॥ लेतजगातिइहांहमसुंद रिआवैकोइसुकुमारि। गहीकरसारीनजरिहँसिमारीभ

शगावतवेदपुराणपारनाहिंपावत तेहिदासीगह्योपरसि
परसि ६३ मधुपुरजायकाहेव्रजडारोबिसराय॥ तुमबिन
लालहालमंदिरमेंमोसोंरह्योनजाय । बिकुलअचेतन
न्दबनविहरतरोवतकछुकनखाय ॥ निशिदिनडगरला
लभलनिरखतपथिकनपूंछतिधाय। शंकरएकबेरफिरि-
योव्रजलालसुखीकरोआय ६४ मेरोककनवांलैगाचोर।
तनकलगतदृगकोर ॥ अतिसुन्दरअमोलकंचनकोरत
नलगेचहुंओर। शंकरउठिनिजपूंछुविरनसोंएरीननँदभ
योभोर६५ जबैबिधिहोतआपनोबाम।सखीकोइआवैना
हींकाम ॥ गुरुद्विजसुतजननीसुतलायोकृष्णजाययम
धाम। अतिप्रियहरिअभिमन्युनलायोरोयोलैलैनाम॥
कौशल्यादशरथतपकीन्हींसहिबरषाहिमघाम । मरती
बारकाजनहिंआयोप्राणछुटेकहिराम॥सिन्धुकियोसन्मा
नसुरनकोदेदैरतनललाम। मुनिकेपियतकहूंनाबरज्यो
बलीकरमकोग्राम ६६श्यामदुहिजैयोसाँझआजुमेरीगै
यांरे॥सासुननंदघरनाहींपियाडरहांहांकरोंपरोंपैयांरे।शं
करदेहोंदुहाईदूनतोहिंनाहींपरोसदुहैयारे ६७ ॥ठुमरी॥
आईहैकठिनऋतुपावसगुपाललाल तुमबिनब्रजबनि
तानसुखपावती । कारेघनघोरमेघवानकीधुकारसुनि
देखिचपलाननैनरैननहिंभावती ॥ ऊधवशिरनायकहि
योजायसमुझाय हमब्रजकीबधूपैब्रजराजकीकहावती।
शंकरमुरारिनँदलालब्रजपालकहि गोविंदगुपालदिनरै
निकोबितावती ६८ शीशघुघुआरकारसोहैछलादार
वारनृपतिकुमारताखीरतनजड़ावकी । काजरललाम

नयनकंठकठुलानमालकरपदकटकलसानिपहिरावकी ॥
जानुपानिचलतगँगागूंकहिबोलतकिलाकिहुंकारकहि दे
तमातुभावकी। शंकरनपावैशेशपारनामहेशलेशगोदभ
रिताहिरानितापकोबुझावती ९९ जियतलाफितल
फिराहिजातगुइयांनिशिनींदनआवैरे । लैअक्रूरगयो
मथुरापावसऋतुजानिवढ़े बदराबिनश्यामअँधेरीएरी
सखीजियमनविकलावैरे ॥ कौंधाचमकितड़पिबिजुली
थिरहोतिनजियडरपावैअली शंकरबरषाऋतुयेसजनी
बिनश्यामनभावैरे२००मैंकैसेभरनजाऊँवारीरे। गोपलि
येमोहनकुंजनमेंरोंकतगैलहमारीरे ॥ चपलचोरचित
छयलगयलमेंमारतचितयदिदारीरे।शंकरकरिवरजोरी
एरिसखिदेखुचूनरीफारीरे १ उमिरिसारीऐसेबीतीजा
य॥ नगृहसुखपायोनभज्योरघुराय । कौलकरिआयो
दियोमूढ़सोभुलाय॥भजनकरिबेकोखलकियोनउपाय।
शिशुनशिशुपनदियोखेलिसोबिताय ॥ गईहैतरुणाई
युवतिनमुसक्याय । भईहैबिरधाइगलेकफरह्योछाय ॥
बधूनहिंबोलैंसुतबोलैंअनखाय। शिथिलभयेगातपरब
शपछिताय ॥ करमअनुसारयमजनरहेआय। शंकरद
शरथसुतबिनकोसहाय २ तजेहमकारेकारेजानि । मो
रभुजंगकाकमधुकरघन कोयलमधुदुखखानि । काजर
लोहदयाजियहियनहिं दुखपरदेतबखानि । शंकरअब
नकरबकारेनकी ऊधवहमपहिंचानि ३ दुनियांतौअ
बअतिअकुलानीरे। सुनियेसुरेशराजाधिराज ॥ आर
द्रादिनक्षत्रसकलप्रभु निकसिगयेकरिअरुणघाम अ

बक्रूटिगयोप्रभुधीरनीर सबभूतलधूरिउड़ानीरे। बाद रवसतनव्योम दिशनप्रभु उठततुरत जहँतहँदिखात कलपरतनपलक्षणदिनरजनीअसविकलकौनपरानीरे॥ हाटबिक्योबेभरासेटकनव धर्मकौनविधिरहीनाथकोइ प्रीतिकरतनधरतंउरमें अरहरिदशसेरविकानीरे। शं करसुखसागरभूतलमें अबनधीरआवतनिहारिउनइस सैचँवतिससंबतमें बरसौअबतौप्रभुपानीरे४ तुमबिनपि यमोकोदुखदियोहैमैन। आयोबसंतनहिंपरतुचैन॥ फू लिरहेजहँतहँरसाल नहिंजातसहेकोकिलकेबैन। केहि जायबिथाकहियेसजनी नहिंकटतबिरहदुखदाईरैन॥छो ड़िसंकलब्रजबालजालकरि कुबरिसवतिसंगकीन्हशैन। करीकोटियतनआवैनभवन फँसिउरभिरह्योकुबिजाके नैन॥ अवधिगयोकरिमासनिपट शठबीतिगईब्रजराज हैन।शंकरऊधवएकअरजकहब्रएकबारबधुनप्रभुआवें ऐन ५ तनकनेकठाढ़ेहोराजकुमार॥ कवननगरके बासीबटोहीकवनभूपकेबार। मृदुमुसक्यानिबानिसुन्दर तन लोभीदेखिदिदार॥ मृगलोचनिधानिनारिलियेसँग कोसुन्दरिसुकुमार। शंकरदेखिरूपसुन्दरअति तनमन रहीनसँभार ६ माधवहौंकिङ्करीतिहारी॥ अन्तर धानभयोमनमोहन तजिअबलासुकुमारी। थरथरात हियरोमनमोहन देखिनिशाअँधियारी॥ आवहुबेगि निकसिनँदनन्दन अस्तभईउजियारी। शंकरदेखिप्रेम अबलनको प्रकटभयेगिरिधारी ७ केंहरिसँगबसि हँसिसुखपायो। कपटीनिपटपुराणनगायो॥ नाहकतैं

पछितातिसखीरी भयोनमातुपिताजेहिंजायो । जन्म
जन्मछलकस्योनन्दसुत केहिगिनतीधनिताहमआयो॥
बामनरूपबनायछल्योबलि नागपाशकसिसुतलपठा
यो । चिरबासीजयबिजयमुक्तदोउ ब्रह्मसुतनसोंशापदे
वायो ॥ रामरूपधरिमातुपिताको अयशअधिकभूतल
दरशायो । मास्योबालिब्याधसमानिश्चरि करणनासि
काविनहिंपठायो ॥ परशुरामशिरकाटिमातुको चलि
चलिमहीनिक्षत्रकरायो । शंकरऊधवजायसँदेशो यहक
हिफिरिपदमाथनवायो ८ तेरेनयनाअजबरतनारेरे ।बां
केकजरबिनकारेरे ॥ क्षणथिरहोतनहींखञ्जनसों चितय
मोहनीडारेरे । शंकरकुटिलकटीलिभृकुटिमें उरभेप्राण
हमारेरे ९ बारकारेसघनघुँघुवारेरे । राजतवदनति
हारेरे॥मुखविथरेसुथरेअतिसुन्दर अतरतगरसोंडारेरे।
शंकरकाहेकपाटदियेकर ठाढ़ीशीशउघारेरे १० समुभि
प्रीतिकाहेनलगाई । कैसजनीतेरीमतिछोईबवराई ॥
अबनिशिदिनपछितातिसखीरी सकलअँगनलीन्हीबि
वराई। शंकरईकारेनवतियनसों भइयनसोनसखीपति
आई ११ आजुसखीमोहिंनींदनआई। तलफितलफि
सारीरैनिगवाँई ॥ लैअक्रूरगयोमथुराको श्यामचलत
साधीनिठुराई। शंकरबाछविमोरमुकुटकी अलकलटक
हियगईहैसमाई १२ सोकोनैनाकटारीतेंमारीरे। मैंनागरि
सुकुमारीरे । बाँकीभौंहमिरोरिसखीरीकठिनमोहनीडारी
रे॥ वादिनतेशंकरनयननमें बसतमुकुटशिरधारीरे १३
इदमित्थमेवनहिंपायोरे।यादुनियांदारुणप्रपंचकोकाहु

नअ्रमबिलगायोरे॥फिरिफिरिरैनदिवसफिरिआवतकाल चक्रपरिगोजहान। सुरअसुरमनुजकिन्नरमुनीश धरिध रितनमनभटकायोरे ॥ मातुपितासमधातुरुधिरसम सु तदुहिताजनमतप्रधान। सुतबदनकेशनहिंतनउरोजय हभेदकहांतेआयोरे॥शिशुतापनमेंदशनजन्मपुनि गिरि जामतकरिखानपान।गिरिपुनिनहोतकरुकोटियतनयह समुझिहरिहिशिरनायोरे॥ मरिकितजातकहांतेआवत कहुनकीन्हींकछुबिचार। यहदेखिसमुझिरघुबरप्रपंच शंकरहँसिशीशनवायोरे॰ १४ कहियोसोदुरयोधनबीर॥ यद्यपिबिपिनतुम्हैंदुखदीन्हों रहननपायोतीर। पहिरा योम्रगचर्मसभामें खेंचिद्रौपदीचीर॥ कंकधरायनामपाँ सनसों हरिउमत्स्यपतिपीर। करतरसोईबिराटनगरमें लाजनभईशरीर॥ कन्यागायनबायबृहन्नट नाच्योहा थमँजीर। फेरतअश्वनिलज्जभूपकेभयोसहदेवअहीर॥ सैरंध्रीद्रुपदीकरिके तहँभय्योरानिकोनीर। शंकरअसब लवानजानिस्वहिंकरियेरणगंभीर १५ हमरोकवनदोष रघुराई ॥ जन्मदियोदारुणकलियुगमें सतयुगधर्मक हौकहँपाई। तकमावांधिप्रपंचझूठकोप्रभुकलियुगमा दीनबसाई ॥ समुझिबिचारिबहुतप्रभुदेख्यों समुझत प्राणअधिकअकुलाई। शंकरअरजसमुझिरघुनंदन तबडिगरीकरियोसुखदाई १६ अवधपुरआलीरी अनँदरह्योछाय ॥ चैतसुदीनवमीयोगशुभपाय। ब्रह्मअविनाशीप्रकट्योरीहरिआय। सकलसुरगावत सुमनझरिलाय। रह्योदशरथयशमहिसरसाय ॥

नृपतिधनदीन्होबहुद्विजनबुलाय रहेरीनटनागरदुआ
रेयशगाय । वेदनहिंपावैंगावैंबुधिउपजाय शंकरसो
इभयोदशरथगृहआय १७ सर्वज्ञताहमजानीतिहा
री । चरअरुअचरकीखबरिलेतहौ जेकरुणानिधि
जलथलझारी ॥ गजकीटेरसुनतप्रभुधायो छोड़ितुरत
खगकीअसवारी । जनप्रहलादकाजकरुणानिधि प्रक
टिअसुरउरतुरतविदारी॥जबभरुहीआरतअतिटेरयो
घण्टादियो अण्डनपैडारी । द्रुपदसुताकीटेरसुनतप्रभु
बसनरूपतनभयोबिहारी ॥ हौअसपैनलख्योनिजलो
चन असप्रतापगावतश्रुतिचारी। शंकरहोयप्रतीतिना
थजब करिकरुणासुधिलेहुहमारी १८ तुमबिनपियमो
कोदुखदियोमदन॥ सिद्धिश्रीसरवोपमयत्री गोपकृष्ण
यशुदाकेनँदन। योग्यलिखीब्रजकुवँरिराधिकाकोप्रणाम
धरिशिशपदन ॥ आगेकुशलइहांनँदनन्दन तुम्हरी
क्षेमकरैंमदनकदन । समाचारइकनाथबाचने तुमबिन
प्रभुभावैनसदन ॥ कबऐहौब्रजरमणबिरजमें कवसरो
जकरकरिहौछदन । अतिअकुलातप्राणनिशिवासर
बिनदेखेयशुदाकेनँदन ॥ शीशमुकुटपटपीतमीतकब
फिरिदेखिहौंसुखसदनबदन। शंकरतजिब्रजराजबिरज
प्रभु केहिसवतिनकेपरेहौफँदन १९ पदकरुनखटकच
लीआवौझटपट॥ आलिंगनकरिश्यामसुँदरको लौटि
आवअबहींचटपट। पदनूपुरहुमेलभूषणकीहोननपावै
आवतखटपट ॥ जैयोसँभरिकुवँरिमन्दिरसैं जानिन
पावैकोईनरनटखट । शंकरयाब्रजलोगबधुनको काम

बड़ोनागरिअटपट १८ चितवतनितठाढ़ोमगनँदको ॥
शिरमोरमुकुटकछनीविशाल मुरलीकरछोटेहैकदको ।
नहिंडरततनकनागरिनरको देखतसूधोऐसोबदको ॥
मुसक्यातबातकहिकहिसबसों बरजोमानतनबढ़ोमद
को । शंकरसुरनरमुनिअहिखगेश सुनुरीध्यावतयाही
पदको २० नायनिलेउपटनकरआई ॥ अम्बरछोरि
दिगम्बरकरिहरि ठकुराइनिआसनबैठाई । रूपकीरा
शिनिहारिगई छकिनैनकीकोरसोंकोरमिलाई ॥ पायँते
शीशलौंशीशतेपायँतक देखिविलोकिरहीमुसक्याई ।
शंकरजानिहँसीहरिको जबहाथसोंप्यारीदेहउपटाई २१
नासामोरिनचायनयन।हँसिगईकहिमोसोंसयनबयन॥
धरिअधरबामकरवरअँगुरी अतिढीठतनककाहूकिभ
यन । शंकरमुखपङ्कजलखिविशाल मनसिजमनमंदि
रकियोअयन २२ तनकसुनिपाईकछुकअसकान ॥
श्रीअवधेशकुवँरसुन्दरअति करसाधेधनुबान । आ
येजनकनगरमुनिकेसँग देखिवेहोतभिहान ॥ खबरि
भईसिगरेमिथिलापुर खलभलपर्योमहान । शंकर
सुखउपज्योसबकेहिय उमँग्योजातरहान २३ कर
करनषकरकरनाजुककमर ॥ लालीभरीगोरीकोमल
कलैयाँ जाँयकरकिकरियोनसमर । पैयांपरतिहाँनाहिंयां
करतिहौं ऐसोबावबावकवनटसर ॥ धरियोधीरबीरकछु
बासरतनकउरोजनरहीहैकेसर। पियदेखौसारेअंगहमा
रेसत्यकहेउँतुमहीपैहसर॥ जबकरिहैतनसदनमदनपि
यबोलिपठैहौंअपनेनगर । शंकरअरजबरजनसुनीकछु

करीहैपसरहासिऐसोमगर २४ चलतमगमोसोंकरतब
तियाँ ॥ बिनपाहिंचानझानननँदनंदन करपरसतहँसतग
हतछातियाँ ।। शंकरजबदेखोतबठाढ़ोद्वारादिवसरातियाँ
२५ कहतजसमोसोंकहतसकुचाँव । घातलगायरहत
कुंजनमेंजबबेचनदधिजाँव ॥ हमकुलबधूडरतिनागरि
ब्रज चरणकमलशिरनाँव । यकदिनभपटिगह्योकुंज
नमें कहतलगोभलदाँव ॥ सोवतआजुपरीमंदिरमें श
तिगहोकरपाँव । शंकरजोनसुनौयशुमतितुमतौनरहौं
नँदगाँव २६ जुलफनकीफाँदीडारिगयोसाखिनंदनँदन
मनमोरलयो ॥ शिरतारकसीटेढ़ीसिताज बसियाब्रजा
यउरकामबयो । हमरेनयनबसिगोगोपालशंकरयेहीसो
मीतभयो २७ बिहँसिउरमेरोपरसिगयोरे ॥ आयगयोमे
रेभवनअचानक हाथजोरिनयोरे । शंकरवादिनतेमेरीस
जनी मनहरिबशभयोरे २८ गयोमेरेनैनोंसेनैनालगाय॥
ठाढ़िहतीअपनेदरवजवा नंदनँदनउतआय । शंकरमो
हिलियोमोरीसजनी बँसुरीस्वरनबजाय २९ खायदधि
डारीमटुकियाफोरि ॥ भरिभरिरँगपिचकारिनमारत रँग
चुनरीदइबोरि। शंकरकहँतककहौंसखीरी भजोकंचुकिबँ
दटोरि ३० हँसिहँसिकरतचलतरसबतियाँ ॥ कहतबसी
मूरतितेरीहिय कटतदिवसतोहिंबिननहिंरातियाँ। शंकर
हौंल्नेहौंदधिकहिकहि मटुकीपकरिछुवतकरछतियाँ ३१
दाबिरहीदसनारसनाछल काहेगोपालकियोयतना। हँ
सिनायनिको बेषबनायलिये करसोंधेमहाउरकरि जत
ना ॥ करपकरतचीन्हिलियोतुमकोपहिरावतकरकंचुकि

ककना । शंकरकरठोढ़ीदियेअँगुरीहँसिकह्योगुपालच
हीअसना ३२ गोरेगोलवदनअतिनीको ॥ जाकोअँ
गदेखतसुंदरलागतअतिकुंदनकोरँगफीको । जबतेझां
किझरोखगईलखिभयोकहाधौंजीको ॥ बसीबिशालवा
लयहसुंदरदेखिहेममुखटीको । शंकरनयननचायगईहँ
सिघूंघुटखोलिजरीको ३३ तिहारीअँखियांमानभरी ॥
कुटिलभौहँसंगतिबसिहसिधसिहोइटेढ़ीव्यगरी । चप
लचोरचितहरननरनकीजानतसबरसरी ॥ योगयुगुति
जानतकाननबसिकरतनकेहिबशरी । शंकरचलुमिलु
बेगिश्यामकोहोयसाखिनयशरी ३४ केशसमेटिउलटि
भुजदोऊ । अतरलगायकसतिजूरोशिरभुजलालीश
शिकीछबिछोऊ ॥ शंकरमैनभरेसुंदरतनकाठिनउरोजख
ड़ेभयेदोऊ ३५ बेदलगेजाकोबकवकसमुझतनासोयो
रीअबतक॥ जबतेहरिसोखसिछूटिगयोतबतेछूटीनाहीं
धिकधिक।दुखदेखिदुखीसुखदेखिसुखीहोंदुखीसुखीबां
धीठकठक॥ भटक्योसबयोनिनमेंतबतकजबतकडरिभू
लिगयोसकसक। शंकरचितरूपचराचरमेंलखुआपहो
यनिर्भयचकचक ३६ मेरेघरआयमोकोकाहेकोजगाय॥
सासुननदमेरेभवननहींहैंकोइसखिआयनजाय । यक
दिनमोहनजानिनपायोंगयोमेरोदधिखाय ॥ आजुकरी
सोकरी मनमोहनपरतितिहारेपाय। शंकरईब्रजदेखिना
रिनर दीहैंकलंकलगाय ३७ सघनघनभईअँखियांबि
नश्याम । निशिदिनस्रवतउरोजगिरिनपरलेतनक्षणहु
विराम । उवासपासपुरवाईचलतितनचपलातनअभि

राम ॥ बकसीबसनबीचअतिराजतिअतिसुंदरकटिदा
म। कंचुकिपटमहिसूखिनपावतजग्योमहीरुहकाम ॥
छप्योनिशाकरबदनकांतिनभरयनिअँधेरीवाम। पदनू
पुरदादुरशोरनसोंराजतसुंदरधाम ॥ चपलाचमककों
रनयननकीभृकुटीधनुषललाम। शंकरउमड़िघुमड़िझि
मिझिमिजलझरिभईआठोयाम ३८ पाणिनिमनहिन
पुंसककीन ॥ भयोमनोजजासुसुतअतिभटत्रिभुवनजा
हिंअधीन । नामुनिकीनबिचारभूलअतिभ्रमरचिशा
स्त्रप्रवीन ॥ मैंजानीमुनिकोमनअतिथिरकामाकियोना
छीन । औरबलीहमदीखसुनोनाहिंबिधिहरिहरसुरती
न ॥ जातिनिकसिजनुतड़ितहियेतेलखिप्रमदनकुचपी
न। शंकरयोकहुँनिरखुनकीन्होंसुरनरमुनिमकभीन ३९
लेबेदधियहिमिसिगहिमटकी। उरसोंउरमोरमिलाय
लयो मैंबरजिरहीमानीनाहटकी ॥ मोहिंआयअचानक
घेरिलियो कहिठाढ़हतोछाहींबटकी। शंकरकहिजीली
न्हीबतियाँ कहिजातनतीनागरिनटकी ४० जगतगति
समुझतसमुझिरह्यों। देखिचराचरयोनिसकलप्रभु
सारनढूंढ़िलह्यों ॥ कइकैहैजीवबसतघटघटसब यासों
चीनगह्यों। यासबइन्द्रजालरघुवरकी यामनसमुझिक
ह्यों ॥ मनबुधिचितहंकारपवनमें झूठहिजीवबह्यों। शं
करजायनआयकछूकोइ भ्रमयासमुझिदह्यों ४१ भयें
कविसबजगजूठोखाय ॥ काहुनकीनबिचारसमुझिघट
कोउपजतमरिजाय । शंकरसमुझिसकलकबितनकी
झूठोलखिमुसक्याय ४२ मेरोसियाकेपियाजियालिया

सजनी ॥ आईदेखिजबतेमिथिलापुर लगतनपलअँखि यांरजनी। हौंतौजावसंगरघुबरके शंकरकाकरिहैंइजनी ४३ निकासिगयोकाहूनजानोजात ॥ बरषग्रहेज्योतिष जननिरखत बैद्यनिहारतगात। नारीपूंछरहीनारीगति बैठसुतासुततात ॥ खोजतरसघोरतअदरखमें जुरिजु रिबूझतबात। भयोनिराशमित्रपुरजनसब कालकियो जबघात ॥ भयोसहायधरमवहिअवसर जगकोछूटोना त। शंकरबिनरघुबीरचरणरति कतहुंनलागीलात ४४ बिनहरिजीवनमरणनछूटो। जहँभजिगयोटिकननहिं पायो पकरिपकरियमकूटो ॥ जबतकहोतबिरागभक्तिन हिं तबतकमोहनटूटो। सुखहितकरतउपायनिरन्तर परधनछलिछलिलूटो ॥ करिकरिकोटियतनजोरतधन बसतनपैसोफूटो। शंकरहोतसुखीतबसुन्दर जबहरि सोंकरैजूटो ४५ अबमनहरिसोंकरौमिताई ॥ छोडु दुसहदारुणबावरअब तजुतनक्रोधबड़ाई। तजिम मतासबनेहकुटुमकी करुशंकरसुखभाई ४६ मुसाफि रकूचभयोधनखाय ॥ कुटुमनारिनरवैश्यधुनतशिर रो वतकरिकरिहाय। बिनपहिंचानज्ञानसँगकीन्होरास्यो हैअपनाय ॥ चौकीदारमित्रसबरोवत अपनीअपनी गाय। सूनीदेखिसरायदेहकी निरखतअतिअकुला य ॥ भठिहारीनारीलैधायो तिनकोलियोमिलाय। हु म्योजायघनयोनिविपिनमें भाजतलगतनपाय ॥ भइ इत्तिलालिखीहाकिमका थानेदारयमाय। जारीभईवरं टचहूंदिशि तऊनअधमदुनाय ॥ भयोनमाफकसूरआ

जतक कीन्हेकोटिउपाय । हाजिरभयोनमूढ़भ्रमतशठ समुझतकर्मडेराय ॥ जीवलवारवृंदचोरनकी संगतिल खीबनाय । शंकरफूटिभयोहाजिरतहँब्रह्मकचहरीआय ४७ कहँगयोपुरुषहजारीभारी ॥ अतरफुलेललगाय निहारतगातकरतजगयारी । धरिदरपनसुंदरतनदेखत देंदेंटेढ़िदिदारी ॥ गहेफिरतहाथियारयारसँगहाथीरथअ सवारी । अपनीसमऔरेनहिंदेखतठानतसबसनरारी ॥ कोऊनगयोसाथछूटेसब जबयहिकीनितयारी । चलती बारकहूनहिंजान्योबैद्यरहेगहिनारी ॥ भईअचेतसकल इन्द्रीतनलगीनयनकीतारी । सुतदाराशिरधुनिधुनिरो वतहाहानाथपुकारी ॥ चलतीबारमोहकरिकरिसुधि नयननबहीपनारी । तबहूंमूढ़धरिधरिसुंदर भक्तिन हृदयसम्हारी ॥ देहजरायकुटुमहिलिमिलिसब प्रेत क्रियाविस्तारी । करिसबक्रियाभुलायदियो फिरिभूली सुधिसरकारी ॥ यागतिनाथसकलजीवनकी दीखीसमु झिबिचारी । बिश्वंभरप्रभुनामसमुझिजिय आशालगी तुम्हारी ॥ हौराजाधिराजरघुनंदन यशगावतश्रुतिचा री । बड़ेबड़ेदुखीसुखीप्रभुकीन्हेंगनतकहतबुधिहारी ॥ नावबनायमीनतनुधरिप्रभु बैवश्वतहिउबारी । गजभ रुहीशवरीगणिकाप्रभु बढ़ीद्रौपदीसारी ॥ सुमिरतही अतिअधमअजामिल पाशयमनकीफारी । तुमधरि हौअवगुणजोजीवके कोफिरिनाथमिदारी ॥ समुझिसु भावसुगमरघुबरको आशालगीहमारी । पवनकुमारव कीलजहाँतहँ रजतकचहरीझारी ॥ हाकिमहुकुमवकी

लसिपाही कोऊकबौसिहारी । शंकरयहीभरोसदोसतो
हिं जेहिप्रभुसुरतिबिसारी ४८ क्रोधबिनाकोतरा अथ
वामोहबिनाकोतरानराकहु ॥ कामक्रोधमदलोभबिषणु
तनु इनबिनकोअनुसरा । कुंतीभोगिधर्मयशपायो क्रो
धसनंदनकरा ॥ मदकरिअसुरदेवपुरपावत बामनलो
भधरा । मोहकियोदशरथकौशल्या सुरपुरबसिनिस्त
रा॥ रथशरीरचलिवेकोहरिनृपकाढ़िदियेईदरा । ईताजि
चलतमूढ़जेबावर सोदलदलमेंपरा ॥ चलोजायमति
टिकैजानिभ्रम सोईनरउबरा । शंकरचलतजातचौकिन
पर कहलजातहरहरा४६ श्रीरघुबीरचरणसुरपुरतरु ॥
शाखासत्यधर्मसुखपल्लव मोक्षफूलआनँदफलरसधरु।
रुँधेकाँटव्यवहारजगतकेतहँकैसेजायतीरवाकेनरु ॥ क
रैबिचारपरशुसुंदरतहँ छांटिदेइइतउतकांटोखरु । शं
करहोयअभयसुंदरसुखछूटिजायआपुइयमपुरडरु ५०
नयासबऔरैख्यालभया ॥ वनइससैचोदासंबतते उ
ठिगईप्रीतिदया । भक्तिबिरागउठेसंयमसब महिपाखंड
छया ॥ मातुपितागुरुदेवामित्रकी रहीननेकमया । मन
मानीबाढ़ीदुनियामें छूटीदेहहया ॥ करतदेखावलोगलो
गनको तीरथवरतगया । शंकरसारसकलभूतलको र
घुबरखेंचिलया ५१ नारिसुरसरीधारापावन ॥ कबिगा
योजिनद्वारनर्कको तीकविजानुलवारा । भयेकहांतेती
सुंदरकबि आननभूमिदुवारा ॥ गंगाद्वारवदनराजतछ
बिप्रागहृदयनिस्तारा।सुंदरताकाशीरोमावलिबाढ़ोसघ
नसेवारा॥ नानादेशउदरतनसोहतऊरूसुभगाकिनारा।

गंगासागरमदनभवन जहँमञ्जरीसुघरादिदारा ॥ शा
स्त्ररीतिसेयेसुखदायकशास्त्रबिनासुखन्नारा । बिनवि
धिसकलधर्मदुखदायकसमुझवनृगाहिउदारा ॥ कोकहि
सकतनरकदरवजवाभयेजहांजगसारा । संनिपातवि
धिसमुझिसमुझिमनकरवनऐसप्रचारा ॥ जहँभयेभूप
भगीरथसुंदरभयेमुनिनपरिवारा। ताकोकहतलवारनर्क
घरत्रधमपतिनिजिनतारा ॥ सेयोकैनदेवमुनिनरऋषि
असुरदनुजसरकारा । खायखायनारीनिंदाकरिकाबियन
जन्मबिगारा॥सेवैसदानारितीरथकोसुतहितमुक्तिपिया
रा। बिषैमगरकोडरैत्रहरनिशशंकरसोइहुशियारा ५२
काप्रभुदेयेकैसेबिलमैये ॥ नीचीजातिगरीबभीलिनी क
न्दमूलखनिखैये । नाधनधामनग्राममनोहर काप्रभुतु
महिंदेखैये ॥ याजियहोतितुम्हेंअपनेढिग देप्रभुत्रसन
बसैये। तुमलायकधनधामकृपानिधिहमगरीबकहँपैये॥
दीनदुखीजियजानिनारिप्रभु कमलचरणशिरनैये । शं
करत्ररजएककरुणानिधि होइत्रनुकूलाचितैये ५३ क्ष
माप्रभुकीजैत्रासनलीजै ॥ मैंत्रपराधकरयोमुनिवरको
जानतभुजबलबीजै । यहहैपरशुकुठारकण्ठयह उचित
होयदैदीजै ॥ कठिनकुठारधारसुनिप्रभुकी कोनश्रमज
लभीजै । शंकरगोद्विजदेखिसूरनाहिं सोइरघुवंशीकही
जै ५४ नाथहारेसबौंबिधिहारे ॥ हमक्षत्रीगुणएकसुनौप्र
भु तुमद्विजनवगुणन्यारे । समताहोतिकहूंशिरपदकी
परियेपांवतुम्हारे ॥ परशुसहितप्रभुनामतुम्हारो केवल
नामहमारे । सरवरिकौनकरैप्रभुतुमसों द्विजतापैधनु

धारे ॥ सहस्त्रबाहुबलवानतासुभुज काटितुमप्रभुडारे। शंकरकरीनिक्षत्रभूमिसब करिअपचितिपितृतारे ५५ फेरिऐयोएहीमगऐयो ॥ औरीडगरजानिजैयोकृपानिधि अरजनमेरीबिसरैयो । हमसीनारिअनाथजानिप्रभु नैनसफलाकियेजैयो ॥ तुमसमपुरुषनहमवनदेखे बस तगयेयुगकैयो । शंकरअनुजसमेतकृपाकरि लौटतभ वनमँभैयो ५६ भूपकिशोरभोरइतकाढ़िगो । अनुजस मेतश्यामतनसुन्दर आयअचानकहीहगपरिगो ॥ बा क्षणतेमोहिंकलनपरतिहै नाजानौटोनासेकछुकरिगो । शंकरजायदेखुसियवरकोलाजशरमएरीसबजरिगो ५७ बिछुरनिकीबतियांकासेंाकहौं ॥ तुमतौजायभये कुबिजा बश हमरीकेसेकटैंकह्योरतियां । शंकरनिठुरभयोमन मोहन तुम्हरेहाथलिखतयोगपातियां ५८ सदाऐसेजीने कोधिकधिकराम । ब्रह्मानन्दअनन्दनपायोचिन्तावसै आठौयाम ॥ कामक्रोधमदमोहलोभवश फिरतसहत हिमघाम । चेरेरहतसदावाहीके जहँदेखतकरदाम ॥ रहसिरहासिसुतगोदखेलावत सुखपावतलखिबाम । नाव्रतनेमदाननाहिंसंयम गयेनतीरथधाम ॥ अतिलो लुपचञ्चलअतिकायर चहतसुयशधननाम । शंकर सुनुरघुवीरकृपाबिन नरकहुदेतनठाम ५९ हेरिलैगोचि तयमनलैगो । जनकनगरनरनारिसबनके हृदयप्रीति कणवैगो ॥ नयनबिशाललालअतिसुन्दर काजरजादू सिकैगो। शंकरमैं कछुजानिनपायोचलतदगासीकैगो६० हमरेछिजतजिदूजादेवनादूजा॥ चापकुठारगहेयाहीतेय

हशिशुसनमुखकूज। जोऔतेउमुनिवरकीनाहींकरतच
रणउठिपूजा॥ तदपिदेवद्विजपूज्यहमारेहमरघुबंशीतनू
जा। शंकरयशिशुजानतनाहींप्रभुप्रतापवाढूजा६१ गभु
आरेघुंघुआरेबदनपर। धूरिभरेबिथरेमुखराजतनयनक
जरसांकारे॥ पदनूपुरबाजतछबिराजतमणिमलियाउर
डारे। शंकरमृदुलमधुरबिहँसनिलखिकोटिमदनछबिवारे
६२ यामिथिलापुरहौंतौरहौंना। जैहौंसाथसियारघुबरके
भूपकिशोरवियोगसहौंना॥लोककुटुमजनमित्रनगरकेति
नसोंयामनमर्मकहौंना। शंकरबिनरघुवीरसियाकेदेखेसु
खपलएकौलहौंना ६३ सांचोजीनाउन्हींकोजीना। इंद्रीकु
पथजानिनहिंपावेंरहेंब्रह्मलवलीना॥ शांतिदयाजिनके
उरमाहींअकरमकरतकभीना। धनकुलगुणपरिवारपाय
अतिसाधुनरहतअधीना॥ देहगेहसुतवितकलत्रमहँफँ
सतनहोयअतिदीना। शंकरतेभवपारउतरिगेऔरभयेभ
वमीना६४ देखुरीभरिभरिईनैनन॥ ईमिथिलापुरनारिन
रनकेहरिलीन्हेतनमनकहिबैनन। जबजैहेंअवधेशकुवँ
रघर ईअँखियांपैहेंसखिचैनन॥ जैहेंकाह्लिकाह्लिसजनी
सुनिआँखियांनिपटलईक्षणसैनन। शंकरजानिसियासि
यबरपुरअबहमरीकटिहैंदुखरैनन ६५ आलिरीकलकैसे
परैरी॥श्रीअवधेशकुमारबिरहयहमनतनबुधिसबमेरोड
रैरी। होइहैंओटनयनसुन्दरजबप्राणव्यानचलिकैसेध
रैरी॥ वामधुरीमुसक्यानिबानिसखिअलकलटकहिय
धचिवसैरी। शंकरजाबसाथरघुबरके हँसनेहोयसोक्योंना
हँसैरी ६६ हमंदिनथोरारह्योदेजान॥सासुतनदमगहेरत

होइहैं जातश्रस्तगिरिभान। शंकरऋयलगयलकसरोक
तीवनहमरीपाहिंचान६७दहीलैफेरिएहौंभोर॥इतउतन
रनागरिचरचतुहैंछोड़ोडगरकरमोर।शंकरछोड़िहँस्योम
नमोहनचितयसखनकीश्रोर६८याप्रियमोराधनुषकेहि
टोरा॥ बेगिबतावलावमेरेनयनन देखौंवहिभुजजोरा।
मोक्षत्रीकुलश्रनलनजानत तीक्षणपरशुकठोरा॥याधनु
कठिनश्रमोलगुरुनको तिहुँपुरश्रतिसुनुशोरा।शंकरको
श्रसबीरभुवनमें सुयशनजानतमोरा६९करिगोरीचित
वनिमेंटोना। वासुश्रुरीमुसवयानिदेखिसखिको श्रसबस
कसहोतिरीकोना॥ निशिबासरकसकतहियसजनी श्रस
नवसनछूटोसखिसोना। शंकरक्षणपलनंदनँदनको मोपै
जातबियोगसहोना ७० श्राखिरश्राजुरहौगेकांहू॥ला
लेभानुभयोनरहेउदिन श्रागेकठिनबिपिननहिंराहू। देहैं
झारिबारिसोंमंदिर परणकुटीश्रपनीकहिनाहू॥ तुमसम
हमनरनयननदेखेयाहीसेप्रभुपरमउछाहू।शंकरप्रेमदेखि
प्रभुश्रटके कोलभिलनसुखउरनसमाहू ७१ चेतौचेतन
यारश्रेश्रब॥ बाहेरनयनखैंचिबुझिकाहाति निजतनदेहु
दिदार। यादुनियांप्रपंचतोमेंनहिं यहुमेरोव्यवहार॥ प
रिमेरेसँगकहानारिके भटकतफिरतउदार। शंकरतजि
श्रमभूठश्रापुतन करुदिनरयनबिहार ७२ लैजावरी
यायेगऊधव ॥ प्राणायामश्रासनक्याजानै हमरेलेखेढो
ग। प्रकृतिपुरुष वियोगकारण विनभयेजानतव्रजलो
ग ॥ नहिंभासतश्ररूपहमरेहियकरिहरिकेसँगभोग।
शंकरजायकहौमोहनसों याव्रजकठिनवियोग ७३ श्रर

जीलैजावयाब्रजकेरि ॥ श्रीमहराजयशोमतिनंदन श
रणसकलब्रजतेरि । सुनियतमातुपितामधुपुरमें भये
लियोगहिघेरि ॥ शिशुपनमेंघरकाहुनसख्यो शरणग
हीनँदकेरि । लैदधिमाखनदूधखवावत तजीलाजमु
खहेरि ॥ छोड़िगयोब्रजबधूविरहमें पटरानीकरीचेरि ।
शंकरएकबेरयदुनन्दन आयदरशदेउफेरि ७४ मटुकि
यामेरीनछुइयोश्याम ॥ आपुहिलेंवउतारिशीशते क्या
ह्यांतुम्हरोकाम । लेनेहोयलेवदधिमोहन जावनतुम्हरे
धाम ॥ सुनतीतुमलैजातधामदधि लेलहौदेतनदाम ।
शंकरनितदधिखातसखिनको सोहमउइनहिंबाम ७५
रहियोढांकेनयनईबांके ॥ देवमनुजकिन्नरसुरनिश्चर
बच्योनइनकेताके । टेढ़ीभृकुटिसंगटेढ़ेभये करिकुटिला
ईनथाके ॥ तीरथदानयोगफलधनको देखतडारतडाके।
शंकरईदृगताहिनवेधत भजतजेचरणउमाके ७६ गारी
देतभजेनेगहारी ॥ किलकतप्रेतपिशाचचहूंदिशि राज
तब्रषभप्रबलअसवारी । बावरबूढ़उमाबरपायेपूरुबकर
मकीहैबलिहारी ॥ मुखबाजनलाजननबसनतननाचिब
जावतहँसिहँसितारी । शंकरभवनभवनगलियनमें नेगि
नजायकथाविस्तारी ७७ माकीगोदसियापरिरोई । हेज
ननीमोहिंवेगिबुलैयो ह्यहानेगीपठैयोकोई ॥ कबदेखि
हौंयहफेरिजनकपुर संगसखिनसँगरचवरसोई । शंकर
फेरिमिलबककबपितुको ऐसदिवसशंकरकबहोई ७८
फेरिकबहूंजनकपुरऐहौ ॥ छयलछबीलोसुघरसुँदरतन
ईनयननकोआयदेखैहौ । शंकरबैठिउचितसखियनसँ